ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24 | अक्टूबर - I - 2022 | अंक - 13 | माउण्ट आबू | Rs.-10

महासम्मेलन • दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण थीम के तहत चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन

मीडिया समस्या के साथ उचित समाधान भी सुझाए

सम्मेलन के दौरान विभिन्न कार्यशालाएं, संगोष्ठी एवं टॉक शो का भी आयोजन किया गया। सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए अपने-अपने विचार रखे एवं श्रेष्ठ संकल्प भी लिये •••

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मीडिया विंग द्वारा शांतिवन में 'समाधानपरक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर आयोजित चार दिवसीय 26वें राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का सिरोही के प्रभारी मंत्री एवं राजस्थान विधानसभा के उप मुख्य सचेतक महेंद्र चौधरी, आईआईएमसी दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी एवं अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन सहित अन्य वक्ताओं ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। देशभर से आये 1500 से अधिक मीडियाकर्मियों को सम्बोधित करते हुए प्रभारी मंत्री महेंद्र चौधरी ने कहा कि पत्रकारों की समाज में बड़ी भूमिका होती है। दुनिया की कोई भी समस्या हो, उसका समाधान ज़रूर होता है। आज समस्या से घिरे समाज में ध्यान बहुत ज़रूरी है। इसमें भी खास मीडियाकर्मियों के लिए ध्यान ज़रूरी है।

यहां आकर शक्ति का अनुभव होता है

माननीय मंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में आकर अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है। देश में कई संस्थानों में जाना हुआ, कई कार्यक्रमों में भाग लिया लेकिन यहां के पवित्र वातावरण में आकर पवित्रता का अनुभव होता है और मन को शांति मिलती है। वर्ष 1937 में बहुत ही छोटे स्तर पर संस्थान की नींव रखी गई थी और अपनी 86 वर्षों की यात्रा में आज विश्व के 140 देशों में राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्म का संदेश दिया जा रहा है।

शब्दों में अपनी ताकत होती है

दिल्ली से आए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म एंड न्यू मीडिया स्टडीज़ के डायरेक्टर प्रो. ओमप्रकाश देवल ने कहा कि शब्द की अपनी ताकत होती है। एक पत्रकार के ऊपर निर्भर करता है कि आप शब्दों को किस तरह चुनते हैं और कैसे प्रस्तुत करते हैं। इससे तय होता है कि उस समाचार पत्र का समाज पर क्या इफेक्ट होगा।

गलत सूचनाएं रोकने हेतु मीडिया साक्षरता शिक्षा

आईआईएमसी,दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि समाज को प्रभावित करने के लिए मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आज 99 फीसदी खबरें सोशल मीडिया से आ रही हैं। आज के माहौल में खबर की सत्यता को परखना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

शब्दों, समाचार से समाज को दें सकारात्मक ऊर्जा

अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि सभी मीडिया के भाई-बहन सबसे पहले स्व परिवर्तन करें। अपनी आंतरिक स्थिति की चेकिंग करें। यदि हमें सारा दिन, 18 घंटे खुशी, संतुष्टता और प्रसन्नता के साथ काम करना है तो रोज़ सुबह आधा घंटा अपनी आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज ज़रूर करें।

इस मंच से एक संकल्प लें

पुणे की एसएमएस प्रोडक्शन की डायरेक्टर सुपर्णा गंगवाल ने कहा कि मीडियाकर्मी यहां से सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने का संकल्प लेकर जाएं।

राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी' की मानद उपाधि से सम्मानित

चेन्नई। राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर,संपादक,ओम शान्ति मीडिया को साउथवेस्टर्न अमेरिकन यूनिवर्सिटी द्वारा मीडिया एंड कम्यूनिकेशन में डी.लिट की मानद उपाधि से नवाज़ा गया। चेन्नई के रशियन कल्चर सेंटर में हुए दीक्षांत समारोह में साउथवेस्टर्न अमेरिकन यूनिवर्सिटी के जॉन पीटर, पूर्व जज हरिदास,हाईकोर्ट तथा एआईएडीएमके पार्टी के अध्यक्ष डॉ. तमिल मगन हुसैन ने राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर को मीडिया एंड कम्यूनिकेशन में डी.लिट प्रदान किया। इस अवसर पर तमिल फिल्म अभिनेता अरुलमनी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

निमित्त-निर्माण भाव से समाज को दिशा दें

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने परमात्मा के घर में देशभर से आये सभी मीडिया के भाई-बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि ईश्वरीय और परमात्म संदेश देने के संदेशवाहक सभी मीडिया के भाई-बहनें हैं। निमित्त और निर्माण भाव से समाज को नई दिशा देने की सेवा करते हैं।

दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें

दिल्ली इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के राजीव कुमार निशाना ने कहा कि जब आप मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता करते हैं तो समस्याएं तो सामने आती हैं लेकिन दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें तो सफलता ज़रूर मिलती है।

जीवन के प्रति रखें सकारात्मक दृष्टिकोण

पटना से आए सीनियर जर्नलिस्ट व ट्रेनर डॉ. राजीव कुमार सिंह ने कहा कि जब तक हमारा जीवन मूल्यनिष्ठ नहीं होगा तब तक हम भारत को स्वर्णयुग नहीं बना सकते हैं।

राजयोग ने बदला मेरा जीवन

अभिनेत्री रीमा सरीन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद मेरा जीवन बदल गया। मैं रोज़ राजयोग और मुरली फॉलो करती हूँ। आज युवा और मीडिया के लिए सकारात्मक होना बहुत ज़रूरी है।

इन शख्सियतों ने भी रखे विचार

बेंगलुरु से आए एमेरिटस के संस्थापक और पीआरसीआई के एमबी जयराम, रायपुर के केटी यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति मानसिंह परमार, एयर इंडिया के ऑथर जितेंद्र भार्गव, रेडियो सरगम इंदौर के मैनेजिंग डायरेक्टर आशीष गुप्ता, ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, अति. मुख्य प्रशासिका न्यूयॉर्क से राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, मीडिया विंग मुम्बई के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. संजय, कटक से विंग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नथमल, विंग के गुजरात की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. रंजन बहन, ग्लोबल पीस इनिशिएटिव की निदेशिका ब्र.कु. डॉ. बिन्नी सरीन, हैदराबाद से विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर सरला आनंद, मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. ओंकारचंद सहित अन्य वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों एवं मीडिया जगत से जुड़े महानुभावों ने अपने विचार रखे।

कलम की पवित्रता करेगी कमाल

आज हम मीडिया की शक्तियों पर ध्यान दें तो उनका उपयोग जिस तरह से होना चाहिए उस रूप में नहीं हो रहा है। मीडिया स्वार्थ से प्रेरित होता प्रतीत हो रहा है। मीडिया माध्यम की पवित्रता पर ही प्रश्नचिन्ह दिखाई दे रहा है। हम सब चाहते हैं इसका उपयोग समाज की हर इकाई की बेहतरी के लिए हो। ऐसा ही चाहते हैं ना? बेहतरी माना जहाँ पर समाज में सुसंस्कार, सभ्यता, समृद्धि एवं सुख हो। हमने मीडिया को सुंदर विचारों के साथ ही आरंभ किया ना! पर चलते-चलते चुनौती एवं स्वार्थ के वश अपने पवित्र उद्देश्य को दरकिनार कर दिया। हम देखना चाहते हैं कि मीडिया ऐसा माध्यम बने कि जहाँ सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय वाली परिकल्पना साकार हो। मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसकी पहुंच बड़ों से लेकर साधारण जन तक है। ये एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो अपनी बात प्रभावी ढ़ंग से दूसरों तक पहुंचा सकता और दूसरों के उन्नत विचारों को अपनी कलम में समाहित कर सकता है। तो आज आवश्यकता है हम प्रभावी माध्यम बनें। बेशक चारों ओर हमारे इस पवित्र उद्देश्य को सार्थक करने में कई सारी चुनौतियां भी हैं किंतु हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि अंधेरे में ही रोशनी की आवश्यकता होती है।

मीडिया माध्यम को प्रभावशाली बनाने के लिए उसकी रचना में शक्ति होनी चाहिए। और उस शक्ति के लिए स्वयं में आत्मबल व श्रेष्ठ विचार होना ज़रूरी है। स्वयं में श्रेष्ठ संस्कार होगा तो वो कलम में भी उतरेगा। आपके शब्दों के वायब्रेशन पाठकों तक पहुंचेंगे और उनके जीवन में भी बदलाव का कारण बनेंगे। हमें सिर्फ समस्याओं और होने वाली घटनाओं का ही समाचार देकर अपनी ज़िम्मेदारी को सीमित नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि मीडिया का उद्देश्य है आम जन की ज़िंदगी में बेहतरी लाना, उनकी जटिलताओं को सरल बनाना, सहयोग करना, सही दिशा देना।

ब्र.कु. गंगाधर

हाल ही में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'समाधानपरक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर महासम्मेलन में ये निष्कर्ष निकलकर सामने आया कि हमें न सिर्फ समाज की समस्याओं को उजागर करना है बल्कि समाधान स्वरूप भी बनना है। अब मन में प्रश्न उठता है कि ऐसी पहल की कैसे जाए? इसके लिए स्वयं के जीवन में सकारात्मकता को दृढ़तापूर्वक अपनाना होगा। हमें आध्यात्मिक शक्तियों से रूबरू होना होगा। इसका सीधा-सा, सरल-सा अर्थ है कि आत्मा को शक्तिशाली करना होगा। आत्मा की आंतरिक शक्तियों को जागृत कर उसे कर्मक्षेत्र पर क्रियान्वित करना होगा। आज आवश्यकता है सशक्त माध्यम बनने की। जो अपने अंदर होगा वही तो कलम में उतरेगा, शब्दों में आयेगा और पाठकों तक उन शक्तियों का संचार होगा। हमारा ये अनुभव है कि अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन जैसे शक्तिशाली टूल को अपने जीवन में स्थान देना ही होगा। मीडिया को मेडिटेशन का साथ मिलेगा तो उसकी रचना में ताकत आयेगी। हमने ये करके देखा कि सुबह उठते ही अगर हम सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपने को मेडिटेट करते हैं, तो श्रेष्ठ विचारों का संचार हमारे मन को प्रसन्न और प्रफुल्लित करता है। मन में कुछ अच्छा करने की इच्छा पैदा होने लगती है। श्रेष्ठ शक्तियों से रूबरू होने के पश्चात् वो शक्तियां हमारे कार्यक्षेत्र में भी प्रवाहित होने लगती हैं और सभी को प्रभावित करने लगती हैं। हम सभी चाहते हैं ना कि समाज सुधरे, समाज आगे बढ़े, बदलाव हो, जहाँ सभी सुख-शांति से रहें। तो सीधा सा और सरल-सा उपाय है कि स्वयं को सशक्त करना ही होगा। अन्यथा तो हमारे पास जो परमात्म प्रदत्त विशेषताएं हैं उनका इस्तेमाल दूसरी दिशा में ही होता रहेगा। क्योंकि जो शक्ति है, वो अपना जलवा तो दिखायेगी ही। और अगर उसमें स्वार्थ मिल जायेगा तो वो समाज की बेहतरी के बजाय नुकसानदायक होगा। हम तो आपको यही बताना चाहते हैं कि कलम में अगर ताकत होगी तो कलम कमल की तरह कीचड़ में भी पवित्रता को बनाये रखेगी। बस, शुरुआत स्वयं से करनी है तो समाधान अवश्य मिलेगा। फिर हमने अगर शुरुआत करने की हिम्मत की तो कारवां यूं ही आगे बढ़ता चला जायेगा और अपने पवित्र उद्देश्य का साकार रूप सामने नज़र आने लगेगा। बेशक हम चौबीसों घंटे ऐसी सेवाओं में अपने आप को बिज़ी रखते हैं, लेकिन अगर इसके साथ ही आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर होंगे तो तरोताज़ा भी महसूस करेंगे, न थकेंगे, न निराश होंगे, न हताश होंगे। तो हमारा आग्रह यही होगा कि 24 घंटे में से एक घंटा स्वयं के लिए निकालें। सकारात्मक ऊर्जा से अपनी बैटरी को चार्ज कर लें। जैसे मोबाइल को चार्ज करते हैं, फिर सारा दिन यूज़ करते हैं। उसी तरह चार्ज होकर हम दिन में आने वाली हर घटनाओं, परिस्थितियों में भी ऊर्जावान रहेंगे और अपनी ज़िम्मेवारी बखूबी निभा पायेंगे। जब सकारात्मक कार्य किया होगा तो वो दुआएं भी हमारे मन-मस्तिष्क को तरोताज़ा रखने में सहायक रहेंगी। और तभी स्वार्थ और परमार्थ दोनों कार्य सिद्ध होंगे।

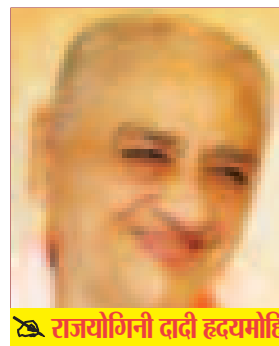

लाइट हाउस वही बन सकता जिसमें सर्व शक्तियों का स्टॉक हो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया के आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शान्त रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन निगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जायें। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों का वायब्रेशन स्वतः जाता है।

बाबा जब आते हैं तो वायब्रेशन अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है। ज्ञान का, सर्व शक्तियों का जो वायुमण्डल में चारों ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल फैलाना है। वह हद की रोशनी फैलाने वाला लाइट हाउस तो कॉमन है, लेकिन हम हैं रूहानी लाइट हाउस। शक्ति, शान्ति और खुशी की लाइट देने वाले लाइट हाउस हैं। लेकिन रूहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सर्व शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पॉवरफुल होती है। तो इतनी शक्तियां जमा करके लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो ज़िम्मेवारी दी है, वह हमको अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिज़ी रहते हैं इसलिए पॉवरफुल योग नहीं हो सकता। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना - यह तो बहुत ऊंची मंज़िल है। इसके लिए अगर हम अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी।

विदेही माना यह नहीं कि देह से एकदम न्यारे हो जायें फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की कर्मेन्द्रियां चाहे सुनने वाली, चाहे देखने वाली, चाहे सोचने वाली यह कोई भी मुख्य कर्मेन्द्रियां हमको देह भान में नहीं लाये अर्थात् देह की कोई भी कर्मेन्द्रियां हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे। कई बार कोई-कोई बात से कनेक्शन नहीं होता तो भी आदत होती है- देखेंगे, सुनेंगे...। तो यह समझो हमारी देखने की कर्मेन्द्रियां जो हैं वह लूज़ हैं। वश में नहीं हैं क्योंकि देखेंगे तो सोच भी चलेगा कि कौन आया, देखने की आँख भी धोखा दे रही है और सोच भी चल रही है कि इस समय क्यों आया, कैसे आया तो हमारी कितनी शक्तियां व्यर्थ गईं। ऐसे हर एक में कोई ना कोई नेचर होती है। कोई को कोई मतलब ही नहीं होगा तो भी सोचने की आदत होगी। छोटी-सी बात पर भी सोच बहुत चलेगा, यानी सोचने की शक्ति, मन पर कन्ट्रोल नहीं है। आंख के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है, कान के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है और किसी की फिर बोलने की आदत होती। दो की बात चल रही होगी तो वह वहाँ भी ज़रूर बीच में बोलेगा, रह नहीं सकेगा। कोई कनेक्शन ही नहीं है फिर भी वह बोलेगा ज़रूर। कोई ना कोई विशेष कर्मेन्द्रियां जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि कौन-सी कर्मेन्द्रियां मेरे कन्ट्रोल में नहीं हैं? जो अपने कन्ट्रोल में नहीं है वही अन्त में धोखा देंगी।

अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी है

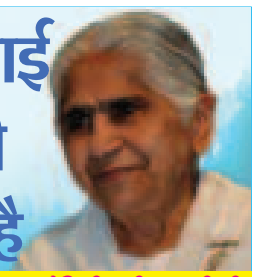

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली पढ़ते-सुनते लगता है कि बाबा कितनी मेहनत करता है हमको बनाने के लिए, जो कोई देख के कहे तुमको ऐसा किसने बनाया? ऐसा बनाता है और रिटर्न कुछ नहीं कर सकते हैं, बनके दिखाते हैं बाबा को। जो कोई मनुष्य आत्मा नहीं बना सकती, वो पतितों को पावन बनाने वाला है और हम कभी पतित बनते हैं, कभी पावन बनते हैं। अभी हमको ऐसा बनाया है जो उनकी हीरे की मूर्ति बनाकर सोमनाथ के मन्दिर में पूजते हैं। तो एवरहैप्पी, एवरहेल्दी रहना हो तो ऐसे अलबेले या लापरवाह नहीं रहना क्योंकि बाबा कहते हैं याद में ऐसे रहो, सब कुछ भूल याद करो। सब कुछ भूल याद करेंगे तो आखिर वो घड़ी आ जाती है नष्टोमोहा...। कहीं भी कोई भी देह-सम्बन्धियों में अथवा अपने विचारों में भी मोह न हो। मोह दुःखदाई है। मोह स्मृति-स्वरूप बनने नहीं देता है। बाबा ने मनमनाभव का वरदान दे दिया फिर बुद्धि को कहता है मध्याजी भव। लक्ष्य को सामने रखो(लक्ष्य सोप है) भले ज्ञान पानी, अमृत मिलता है फिर भी सोप के बिगर सफाई नहीं होगी। भले ज्ञान सुनेंगे सुनायेंगे, अच्छा लगता है, मन शान्त हो जाता है। मनमनाभव होने से अंग-अंग शीतल हैं, योगी के अंग शीतल हैं। शीतल शब्द बहुत अच्छा है, शीतला देवी का पूजन है। कोई भी प्रकार की गर्म नेचर नहीं है, शीतल नेचर है। अपने संग के रंग में हमारे सारे पाप खलास कर दिये हैं। तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे...।

तो मनन चिंतन में कोई चिंता-फिकर नहीं है। कार्य भले करो निश्चिंत रहो ना! पूछताछ काहे को करें, बाबा को कराना है तो ऑटोमेटिकली आज दिन तक आपेही होता आया है। बाबा ने मुझे जहाँ जैसे रखा वहाँ हाज़िर रही हूँ तो इसमें बहुत आनंद है। भक्ति में भी कहते हैं जो हरि की इच्छा। अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी होती है भागीरथ के समान, तो ऐसे आप भी आनंद लो ना! जब तक वह अपने जैसा नहीं बनाता तब तक छोड़ता नहीं है। भगवान पीछे उसके पड़ेगा जो सच्ची सजनी होगी, सगाई करते ही उसकी याद रहती है, पर शादी के बाद में भूल जाये तो? कोई कर्मबन्धन खींचता हो तो? बाप क्या करेगा! पिताव्रत में सपूत बनना है, सपूत वह जो सबूत देवे। बाबा ने कहा बच्चे ने माना। बच्चा कहे हाँ जी, बाबा कहता मैं तुम्हारे साथ हूँ।

किसी भी बात को न देख अपने को देखो

बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है- बच्चे यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। ब्राह्मण न बनें तो देवता नहीं बन सकते। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्त्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। ग्रहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर। इन तीनों पर ग्रहचारी आ नहीं सकती। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की ग्रहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। ब्रहस्पति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है ज़रूर। मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ- यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मामुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्री वाचने देखने वाला हूँ। सफलता का सितारा हूँ - हमारे ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक-दो से कम्पटीशन करते रहें, भेंट करना, क्रिटिसाइज करना- यह ऊंचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की डयूटी मिली हुई है? हरेक को डयूटी मिली है- अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई डयूटी नहीं देता। मुझे कोई नहीं सम्भाले नहीं तो बर्डन हो जायेगा। मैं कोई छोटी बेबी थोड़े ही हूँ, जो घड़ी-घड़ी हमें कोई सम्भालता रहे। हमारा ध्यान रखे। इतना छोटा तो नहीं बनना है। तो मुख्य बात अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे। तो एकरस स्थिति बनाने के लिए अन्तर्मुखी बनो।

बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं है। स्थिति नीचे-ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई। हमारी सदा शुभ भावना शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है। मुख चलाना नहीं है। अगर मुँह बदल भी जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा। हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को बनाना है। तो बाबा कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता ज़रूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह इशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं है। तो मुख्य बात है सब बातों को छोड़ अन्दर से सन्यास वृत्ति रखो। सबसे बड़े सन्यासी तो हम हैं। सारी दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं। इससे कोई भी प्रीत नहीं।

सच्चाई और स्नेह हमारी भावना से निकल न जायें। जहाँ सच्चाई की भावना है। वहाँ कुछ भी कहो, सामने वाले को भाता है। जहाँ स्नेह नहीं है, शब्द हैं तो वो दिल को लगते हैं। हमारा हर आत्मा के प्रति सच्चा स्नेह हो। कल्याण की भावना हो। बाबा जितना स्नेह हमें देता है उससे हम एग्ज़ाम्पल बनकर दिखाएं।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में क्या कमी है।

प्रकृति के मालिक बनें न कि उनके सेवक

मनुष्य जब धरा पर आता तो सबसे पहले वो पदार्थों का सेवन करता, जैसे ही वो बड़ा होता तो उसके सम्बन्ध व्यक्ति , प्रकृति से बनते हैं। ये सब व्यक्ति के लिए आवश्यक है किंतु हम उसे भोगते हैं। परमात्मा का कहना है कि आप सबकुछ करते उससे अनासक्त रहें तब पुण्य और श्रेष्ठ बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। अन्यथा तो हम उसके सेवक बन जाते, हमें मालिक बनकर इन सब चीज़ों का सेवन और उपयोग करना है। तभी हम सफल हो सकेंगे।

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मनुष्य- परमात्मा की न्यायी, अजन्मा और अभोक्ता तो है नहीं; वह तो माता के गर्भ से जन्म लेता है और जन्म लेते ही वह इस संसार के जलवायु, दुग्ध तथा हवा का सेवन अथवा भोग करने लगता है और निरपवाद(बिना अपवाद का) रूप से अपने दैहिक माता-पिता और उनके द्वारा दूसरों से उसके सम्बन्ध भी स्थापित हो ही जाते हैं। कोई भी मनुष्य इनसे बच नहीं सकता क्योंकि शरीर के विकास के लिए और उसे सशक्त बनाये रखने के लिए उसे भक्ष्य और पेय या भोजन और पदार्थ तो चाहिए ही और प्रारंभ ही से, शिशु अवस्था से, उसका लालन-पालन, शिक्षण-प्रशिक्षण करने के लिए सम्बन्धी भी चाहिए ही। इस प्रकार उसे सम्बन्ध और समाज की तथा भोग्य और पदार्थों की आवश्यकता तो होती ही है।

अब देखने की बात यह है मनुष्य की इच्छायें-तृष्णायें, उसके संकल्प-विकल्प, उसके कार्य-कलाप और कर्म-विकर्म, उसके मन, वचन और कृत्य-अकृत्य भी या तो भोग्य पदार्थों से या सम्बन्धों से जुटे होते हैं। इनको छोड़कर वह और किसी विषय पर यदि चिंतन करता भी है तो उस चिंतन में इन सम्बन्धों की पुट तो होती ही है। वास्तव में मनुष्य का सुख-दुःख, सुविधा-असुविधा, साहित्य-कला सब इन्हीं दो से- भोग्य पदार्थों और दैहिक-सम्बन्धों से ही जुटे होते हैं। उसकी आशा-निराशा, स्वप्न-स्मृतियां सभी इसी धुरी पर घूमती हैं। इनका प्रारंभ तो बहुत सरल, स्वाभाविक और सहज तरीके से होता है। परंतु आगे चलकर यही जटिल, बंधनकारी, बोझिल और दुःखोत्पादक बनते जाते हैं।

इसलिए ही ईश्वरीय ज्ञान, योग, दिव्यगुणों की धारणा तथा सेवा की आवश्यकता होती है ताकि ये सम्बन्ध और पदार्थों का भोग हमारे लिए रोग-शोक, कष्ट-क्लेश, दुःख और बंधनों का कारण न बनें। मनुष्य मुक्ति और जीवनमुक्ति की जो कामना करता है, वह इन्हीं भोगों और सम्बन्धों ही से पैदा होने वाले दुःखों से छुटकारा पाने की इच्छा को लेकर होता है। वह परमात्मा से योग इसलिए लगाता है कि इन भोगों और सम्बन्धों के संसर्ग(प्रेम) से उत्पन्न विकर्मों और विकारों का नाश कर सके। वह दिव्यगुणों की धारणा भी इसलिए ही करना चाहता है कि वह भोग-विलास से ऊपर उठकर और सम्बन्धों को सद्गुण-युक्त बनाकर, सुखकर बनाये और उनमें दुर्गुण रूप जो दुःख का कांटा है, उसे निकाल फेंके। वह सेवा वृत्ति, सेवा भावना और सेवा रूप कर्म को भी इसलिए अपनाना चाहता है कि उसके सम्बन्ध केवल सेवा-भाव पर टिके हों और वह उनके जाल में फंस न जायें। इस प्रकार, अध्यात्म की भी सारी चर्चा ही इन भोगों और सम्बन्धों की बात को ठीक करने के लक्ष्य ही से हैं।

इसी संदर्भ में यहाँ कुछेक बातों का उल्लेख उपयोगी होगा। यद्यपि वे सामान्य एवं साधारण श्रेणी की ही लगती हैं परंतु सत्य और उन पर ध्यान देकर उन्हें आचरण में लाना है भी आवश्यक और लाभप्रद। उनमें से पहले हम भोग्य-पदार्थों की बात को लेते हैं।

1. सेवक सेव्य सम्बन्ध

जैसे पहले बताया कि शरीर को स्वस्थ, सशक्त और समर्थ बनाये रखने के लिए खान-पान की आवश्यकता होती है। ऐसे ही दूसरी इन्द्रियों के भी अपने विषय हैं। आँखों द्वारा हम हरियाली और रंग-बिरंगे फूल देखते हैं, झरने और नील गगन में तारे देखते हैं, नदी और पर्वत को देखते हुए ठंडी हवा के झोंकों में झूमने का सुख अनुभव करते हैं, इन्द्र धनुष और तितली की रंगीनियों को देखकर चकित भाव से विभोर हो उठते हैं, मोर के नाच और मंदिर की मूर्ति कला से प्रभावित होते हैं, कोयल की कू-कू और हर पशु-पंछी की बोली सुनकर लुभायमान होते हैं, जिभा से आम जैसे फलों के रस और पानी की प्यास बुझाने की शक्ति का लाभ लेते हैं, जड़ी-बूटी भी, गंगा का शीतल जल भी, खनिज पदार्थ, धातु आदि भी हैं और हीरे-मोती भी। ये सब हमारे लिए ही तो हैं। परंतु कष्ट और क्लेश तब पैदा होता है जब हम इनमें आसक्त हो जाते हैं, इनके आकर्षण-डोरों में बंध जाते हैं और इनके गुलाम होकर रहने लगते हैं या तो इनको प्राप्त करने के लिए आतुर-व्याकुल हो उठते हैं। कुदरत ने इन्हें दिया है हमारी सेवा के लिए परंतु हम इन्हें अपना स्वामी बना देते हैं। मन में यही छाये रहते हैं। इनकी ही कृपा को पाने की हम हर कोशिश करते हैं। किसी ने कहा है कि "खाना इंसान के लिए बना है, इन्सान खाने के लिए नहीं।" ठीक वैसे ही जितने भी भोग्य पदार्थ हैं, वे हमारे लिए बने हैं, हम उनके लिए नहीं। परंतु जब मनुष्य इसके विपरित भाव पर अपना जीवन जीने लगता है तब उसमें विकार उत्पन्न होते हैं। विषय-आसक्त होकर, वह विषय-आकुल और विषय-लोलुप बन जाता है। और विषयों का सेवक होकर जीवन जीने लगता है। विषयों के प्रति सेवक भाव रखने तथा उनमें आसक्त न होने में ही जीवन की सफलता है।

2. वर्ज्य सम्बन्ध

संसार में कुछेक पदार्थ ऐसे भी हैं जो हमारे खान-पान के लिए नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर तम्बाकू या उससे बने हुए सिगरेट-बीड़ी, चिल्लम-हुक्का, अफीम या उससे बने हुए नशीले पदार्थ आदि - ये मनुष्य के लिए भक्ष्य पेय या सेव्य नहीं हैं। ये वर्जित हैं। इनका सेवन ठीक नहीं है।

3. पदार्थों से सम्बन्ध-परिवर्तन

जन्म होते ही अनेकानेक पदार्थों से हमारे सम्बन्ध तो हो ही जाते हैं। परंतु उन सम्बन्धों में हमारी मनोवृत्ति ही से बहुत अंतर पड़ता है। यदि हम आसक्ति, इच्छा, तृष्णा, विषय-लोलुप्ता, इत्यादि से कोई पदार्थ लेते हैं तो उससे एक तो हमारी वह वृत्ति दिनोंदिन दृढ़ होती जाती है और हमें अपना दास बना लेती है, दूसरे वस्तु के आधिक्य, असमय सेवन इत्यादि के कारण स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है और धन का भी अपव्यय होता है तथा संसार में अनाचार फैलाने के निमित्त बनते हैं। यदि हम उनको बाहुल्यता से और वैभव-प्राप्ति की वृत्ति से प्रयोग करते हैं तो हम विलासिता की ओर बढ़ते हैं और ऐश के बंदी बन जाते हैं। इसके विपरित यदि हम उनके प्रति सात्विकता, संतुलन और संयम को बनाये रखते हैं और उन्हें सेवा भाव से या 'निष्काम' वृत्ति से प्रयोग करते हैं तो हम हानि-लाभ, प्राप्ति-अप्राप्ति इत्यादि हर अवस्था में संतुष्ट और सुखी रहते हैं। यदि हम त्याग भावना और सादगी को महत्व देते हैं तो हमारे आचरण और अतीन्द्रिय सुख में उत्कर्ष होता है और फिर यदि उन्हें प्रभु-समर्पण करते हैं तो हमारा नैतिक बल बढ़ता है, आत्मा पवित्र होती है और हम पाप अथवा संताप से बचते हैं।

4. व्यक्तियों से अपने सम्बन्धों का दिव्यीकरण

जो बात हमने पदार्थों के सम्बन्ध में कही वही व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। देह के सम्बन्धियों से जब हम व्यवहार करते हैं तो लेन-देन के कारण कर्मों का लेखा-जोखा तो बनता ही है। फिर उसी हिसाब-किताब के कारण पुनः हम सुख-दुःख के भागीदार बनते रहते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम इन सम्बन्धों में भी वृत्ति और दृष्टि का परिवर्तन करें। जब तक हम इन सम्बन्धों को लौकिक एवं साधारण बनाये रखेंगे तब तक हमारे कर्मों का खाता चलता रहेगा। कोई व्यक्ति ज्ञानी या योगी ही क्यों न हो, उससे भी यदि हम लौकिक रीति से सम्बन्ध, व्यवहार या लेन-देन बनायें रखेंगे तब तक हम कर्मों की ज़ंजीरों में जकड़े रहेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि उस दृष्टि और वृत्ति को बदलकर उन सम्बन्धों को अलौकिक, योगानुकूल, मर्यादा-युक्त, सेवा-निमित्त तथा आत्मिक दृष्टि पर आधृत बनायें। वैसे ही किन्हीं प्रकार के व्यक्तियों से भी हमारा सम्बन्ध वर्ज्य है। उनका संग हमारे लिए 'कुसंग' है। वे हमारे मन एवं चरित्र को वैसे ही दूषित करते हैं जैसे वर्ज्य पदार्थों के भोग से शरीर को हानि पहुंचती है। वे हमारी चेष्टाओं को बिगाड़ते हैं, हमारे संकल्पों को निकृष्ट बनाते हैं और हमारे विचारों को नकारात्मक बनाते हैं। वर्ज्य भोग-पदार्थों से तो एक जन्म के लिए हानि होती है परंतु वर्ज्य सम्बन्धों से मन एवं संस्कारों के दूषित होने से जन्म-जन्मांतर की हानि होती है।

शिमला-सुन्नी(हि.प्र.)। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्रकाश भाई,मा.आबू तथा ब्र.कु. रेवा दास भाई। इसके साथ ही ब्र.कु. प्रकाश भाई ने राज्यपाल महोदय को माउण्ट आबू में आने का निमंत्रण भी दिया।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। सत्यपाल सिंह बघेल,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर लॉ एंड जस्टिस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता बहन एवं ब्र.कु. रूपा बहन।

पौंटा साहिब(हि.प्र.)। एस.डी.एम. विवेक महाजन स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन को सम्मानित करते हुए।

मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत आयोजित रैली के उद्घाटन में हथुआ एसडीएम राकेश कुमार, भूमि सुधार उप समाहर्ता साहुल हसन खाँ, नगर परिषद पूर्व चेयरमैन आनंद कुमार यादव, पुलिस पदाधिकारी जोगिंदर सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. विनोद भाई तथा बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

जयपुर-श्रीनिवास नगर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के पीस पैलेस सीकर रोड सेवाकेन्द्र में आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड के निदेशक, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष सीताराम अग्रवाल, पूर्व पार्षद सुशील शर्मा, उद्योगपति ब्र.कु. मदन लाल शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. कविता बहन सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। थाना प्रभारी अभिनेंद्र सिंह एवं अन्य पुलिस स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

एकांत का सौंदर्य क्या होता...!!

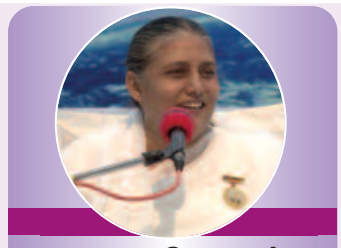

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

दुनिया के अन्दर लोग एकांत में रहना नहीं चाहते हैं। पर अभी विशेष लॉकडाउन के समय तो हरेक ने महसूस किया कि एकांत माना वो समझने लगे अकेलापन। और उस अकेलापन में कई लोग डिप्रेशन में भी गये। दुनिया के अन्दर डिप्रेशन का आँकड़ा भरता गया,क्योंकि लोगों को जैसे कोई है नहीं, किसके साथ बात करें तो इसीलिए जो है एकांत भाता नहीं है। लेकिन हम बाबा के बच्चों को एकांत बहुत अच्छा लगता है। क्यों? क्योंकि इसमें हम अपनी जितनी उन्नति करना चाहें, जितनी अपनी प्रोग्रेस करना चाहें वो हम सहजता से कर सकते हैं। एकांत का मतलब क्या? जब कहते हैं एकांत का सौंदर्य। तो उसका सौंदर्य क्या है? ऐसे कई बार बाबा ने उसका अर्थ बताकर कहा है कि एकांत माना एक के अंत में खो जाना। लेकिन एक के अंत में खोने के लिए हमें सुन्दर विचार चाहिए। क्यों सुन्दर विचार चाहिए ताकि अन्दर में कहीं वो डिप्रेशन वाले, कमज़ोरी के विचार न आयें। जैसे डिप्रेशन में लोग जाते हैं तो वो सभी को अपने आप से दूर कर देते हैं। और एकांत में ही फिर निगेटिव सोचते रहते हैं। इसी कारण से वो डिप्रेशन में जाते हैं। और एकांत के सौंदर्य का अनुभव नहीं कर पाते।

एकांत का अनुभव करने के लिए बहुत सुंदर विचार चाहिए। और उसमें भी जब एक बाबा के अंत में खोना है तो खुशी में जैसे बाबा कहता है ना कि मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों में खुश रहो, हल्के रहो। तो जितना अन्दर में खुशी होगी उतना एकांत बहुत अच्छा लगेगा। खुशी वाले संकल्प हों, और खुशी-खुशी से जब हम बाबा की याद में समाते हैं तो जैसे उसका आनंद अलौकिक होता है। इसीलिए ये एकांत का सौंदर्य अनुभव करने के लिए सबसे पहले खुशी के आधार पर आनंद की स्थिति में अपने आप को स्थित करना। उसी आनंद से नींद नहीं आयेगी, निगेटिव विचार नहीं चलेंगे और सहजता से हम उसमें समा जायेंगे। बाबा की याद में बहुत अन्दर में मज़ा आयेगा।

दुनिया में जब ऋषि-मुनियों ने एकांत का अनुभव किया, अगर उसका विज़न मैं आपके दिमाग में उत्पन्न करने के लिए कहूँ तो क्या अनुभव होगा? क्या विज़न बनेगा, क्या चित्र आपके सामने आयेगा। ऋषि-मुनि एकांत में बैठा है, कहाँ बैठा होता है? गुफा में बैठा होता है या हिमालय पर बैठा होता है ऐसे ही एक चित्र सामने आता है। इसीलिए हमें बाबा भी कहते हैं कि तुम्हें एकांत का अनुभव करने के लिए गुफा में बैठ जाना है, हमारी गुफा कौन-सी है? भीतर जाना। आत्मा की भृकुटि की ये गुफा है। इसीलिए हमें कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमारा एकांत अन्दर में है। और जितना आत्मा के, उस भृकुटि के मध्य की गुफा में हम अपने आपको ले चलें और गुफा में बैठते हैं तो एकदम साइलेंस। जैसे लोग हिमालय आदि पर चले जाते हैं तपस्या आदि करने के लिए, एकांत में बैठ जाते हैं। अर्थात् हर प्रकार के आवाज़ से दूर हो जाना। लेकिन अगर अन्दर में बहुत आवाज़ हो तो क्या करेंगे? अन्दर में ही व्यर्थ संकल्पों का आवाज़ हो तो क्या करेंगे कहाँ जायेगा व्यक्ति? इसीलिए बाबा कहते हैं कि तुम्हें शरीर से कहीं भी जाने की ज़रूरत नहीं है, कहीं हिमालय पर जाने की ज़रूरत नहीं है लेकिन हम अपने मन को भीतर ले जायें और उस भृकुटि की गुफा में साइलेंस बैठ जायें। लेकिन साइलेंस भी कैसी, खुशी वाली साइलेंस।

आनंद वाली साइलेंस जिसको कहा जाता है स्वीट साइलेंस। एक है डेड साइलेंस। हमें डेड साइलेंस में नहीं जाना है। हमें स्वीट साइलेंस में बैठना है। बहुत मीठी वो अवस्था हो अन्दर की, खुशी की अवस्था हो, आनंद की अवस्था हो उसको कहते हैं स्वीट साइलेंस। तो उस गुफा में अन्दर जाना है। उस समय मन को एकाग्र करना है बाबा के उस स्वरूप पर। याद आता है कि जब पहली बार शिव बाबा का अवतरण हुआ ब्रह्मा बाबा में, तो बाबा ने सबसे पहले अपने परिचय में क्या कहा? निजानंद स्वरूपम शिवोहम... शिवोहम... बाबा की अनंत महिमा है लेकिन उस समय में भी भगवान ने अपना परिचय दिया कि मैं निजानंद स्वरूप हूँ। मैं नित्यानंद स्वरूप हूँ और इसीलिए दुनिया में भी लोगों ने इसी को ही हाइएस्ट अचीवमेंट कहा। सर्वश्रेष्ठ अगर प्राप्ति है राजयोग की तो वो है निजानंद का अनुभव करना, क्योंकि उससे क्या होता है अतीन्द्रिय सुख जो आज तक मनुष्य इन्द्रियों के सुख के पीछे भागते रहे, उसका अनुभव करने के लिए भागते रहे, उसमें आनंद ढूंढते रहे, लेकिन जब आत्मा निजानंद के स्वरूप में हो तो अतिन्द्रिय सुख का अनुभव होगा और एकांत माना निरसता नहीं, अकेलापन नहीं, लेकिन एकांत माना अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना। इसीलिए निजानंद स्वरूप का भगवान ने जो परिचय दिया, इसीलिए बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने भी उसे अनुभव करना चाहा। आनंद को सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है? क्योंकि आनंद का कोई अपोजिट नहीं है। जैसे सुख का अपोजिट दुःख है, खुशी का अपोजिट उदासी है, हर एक चीज़ का अपोजिट मिलेगा। लेकिन आनंद का कोई अपोजिट नहीं,आनंद माना आनंद। तो इसीलिए वो सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति मानी गई।

ब्रह्मा बाबा के कई ऐसे चित्र बने हुए हैं जो देखते हैं कि बाबा पहाड़ों पर ऐसे हाथ रखके बैठे हुए हैं, कैसे एक आनंद की स्थिति में खोए हुए हैं। 93 वर्ष की आयु में बाबा को कहीं झुटका आ गया हो ऐसा नहीं हुआ। क्यों? क्योंकि बाबा उस परम आनंद में रहते थे। मनसा-वाचा-कर्मणा खुशी में रहते थे। इसीलिए जब बैठते थे तो परमआंनद की स्थिति में सहजता से अन्दर चले जाते थे। ये है एकांत।

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। महेश जोशी,कैबिनेट मंत्री,राज.सरकार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनामिका बहन एवं ब्र.कु. एकता बहन।

कुशीनगर-उ.प्र.। स्वतंत्रता दिवस पर 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत आयोजित रैली का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए बीज विकास मंत्री राजेश्वर सिंह। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

आरा-भोजपुर(बिहार)। पुलिस अधीक्षक संजय कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO: - 30826907041,IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR

Paytm
Accepted Here
Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c | Any Debit or Credit Card | Paytm Postpaid

BHIM UPI

चरखी दादरी(हरियाणा)। जिला उपायुक्त को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन।

फतेहाबाद-हरियाणा। पूर्व सीपीएस चौधरी प्रहलाद सिंह गिल्लाखेड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी दीदी।

रसड़ा-उ.प्र.। एस.डी.एम. सर्वेश यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जागृति बहन।

सिवनी मंडी-हरियाणा। ऑटो मार्केट के प्रधान एवं प्रसिद्ध उद्योगपति राम प्रकाश चोपड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेन्दर बहन।

अयोध्या-उ.प्र.। दशरथ महल के महंत देवेन्द्र दास जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा बहन।

दिल्ली-बवाना। श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिल्ली यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डॉ. चंद्रकांता के.माथुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रिका दीदी।

दिल्ली-दिलशाद कॉलोनी। अल्का शर्मा, एडिशनल कमिश्नर,म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफ दिल्ली,ईस्ट दिल्ली को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तनुजा बहन।

सोनीपत-हरियाणा। डॉ. नितिन रावल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रमोद दीदी तथा ब्र.कु. सुनीता दीदी।

चिरकुंडा-झारखण्ड। पंचेत दामोदर वैली कॉर्पोरेशन(डीवीसी) सीआईएसएफ स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व रक्षाबंधन का महत्व बताते हुए ब्र.कु. पिंकी बहन।

कुमारियों प्रति....

निश्चय अगर पक्का तो परिवर्तन निश्चित

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

हम सभी ने जीवन का अध्यात्म मार्ग पसंद किया है बहुत बड़ी बात है। ज़रूर वो संस्कार आत्मा में हैं। आजकल हम देखते हैं कि छोटे बच्चे कथा करते हैं, गाड़ी चलाते हैं, कोई म्यूज़िक बजाते हैं, मास्टर होते हैं। तो कहते हैं कि पूर्व जन्म से ये कला लेकर आये हैं। आप सभी ने भी अपने युवा काल में, किशोर आयु में, बचपन में ही ज्ञान को पाकर जीवन में धारण किया। हमें सदा अपने आप में लक्ष्य रखना है कि जो भी मार्ग चुनें उसमें विशेष बनना है, साधारण नहीं। पढ़ना है तो फर्स्टक्लास पढ़ना है। जो भी हुनर सीखना है वो फर्स्टक्लास सीखना है। बेशक जो च्वाइस आप करते हैं वो अच्छी तरह से आदि-मध्य-अन्त सोच-समझकर करें। थोड़ा टाइम भले लीजिए लेकिन अच्छी तरह विस्तार से बाबा के ज्ञान को, योग को, धारणाओं को, सेवा को, दिनचर्या, नियम, मर्यादा, संगठन, ये सारी चीज़ें अच्छी तरह समझिये। एक बार फाइनल कर लेने के बाद फिर पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। घड़ी-घड़ी निर्णय बदलने में, लक्ष्य बदलते रहने में काफी टाइम वेस्ट होता है। घड़ी-घड़ी मन बदले नहीं। बाबा का ज्ञान और योग वास्तव में जीवन जीने की कला है। जीवन पद्धति है, लाइफ स्टाइल है। इसमें हमें अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। न अपने आप को धोखे में रखना है और न ही माँ-बाप को। करेंगे, चलेंगे, देखेंगे, क्योंकि अन्दर खुद का निर्णय नहीं है तो हम टाइम पास करते रहते हैं। बाबा के ज्ञान में कोई अंधश्रद्धा नहीं है, बाबा का ज्ञान सत्य है, विवेकसंगत है। आप खुद अच्छी रीति अध्ययन करें, अभ्यास करें फिर स्वीकारें। फिर पूरा फोकस हो जाइए। फिर ऐसे नहीं कि उसका भी स्वाद ले लें, ये भी रस ले लें, ये भी फायदा ले लें, नहीं। भल आप सेवा करेंगे पर आपका अपना कोई स्वरूप नहीं बनेगा।

बाबा के ज्ञान में शुरू से आप देखिए निश्चयबुद्धि बहुत ज़रूरी है। निश्चयबुद्धि बनने के बाद ही पुरुषार्थ तीव्र बनता है। नहीं तो व्यक्ति सालों आयेगा, जायेगा पर जब तक निश्चय नहीं भगवान पढ़ाते हैं ब्रह्मा मुख से तब तक भगवान की आज्ञा पर चलने की ताकत नहीं आती, भगवान पर कुर्बान नहीं हो सकते। अगर कुछ बनना है तो बाबा का राइट हैंड बनो, माना स्पेशल बनना है। राइट हैंड किसको कहते हैं जो विश्वास के पात्र होते हैं, ज़िम्मेवार, एवररेडी, राइटियस जीवन। कोई करे न करे ये मेरा राइट हैंड है ये करेगा। कारण नहीं, बहाने नहीं, कोई करे न करे राइट हैंड माना मैं करूँगा,आप निश्चिंत रहिए। अगर ऐसा बनना है तो बाबा माना बाबा, बस एक पर फोकस। ज्ञान योग माना ज्ञान योग। और इच्छायें नहीं, और शौक़ नहीं, और रस नहीं। बाबा में ही सबकुछ। क्योंकि जितनी और हॉबिज़ हैं उतना आपका व्यक्तित्व विभाजित होता है। इसलिए क्यों प्राचीन काल में ही शिक्षा प्रणाली में जीवन की शुरूआत के 25 वर्ष ब्रह्मचर्य श्रम की स्थिति में ही विद्या अध्ययन करते थे, क्योंकि पवित्रता बुद्धि को एकाग्र रखती है। बात वो नहीं है कि आप घर में रहते हैं या सेंटर में, बात ये है कि आपका पक्का निर्णय हो कि जीना कैसे है। घर में रहें तो भी हम पक्के ब्रह्माकुमार-कुमारी हो। हमारी दिनचर्या वही हो। लाइफ की डिसिप्लिन तो दृढ़ होनी चाहिए ना! घर में रहते भी आप पक्के योगी दिखने चाहिए,सच्चे वैरागी नज़र आने चाहिए। अगर वो नहीं है तो फिर क्या हम ज्ञान में चलते हैं! राइट हैंड माना राइटियस जीवन। जीवन हमारा सही हो। तो अपने आपको चेंज करना है। खुद के पीछे मेहनत करो। तकलीफ तो हमें भी हुई थी शुरू में। 16 साल के बाबा के घर में आये। 3:30 बजे उठने का किसको अभ्यास होगा! तो देखो सच में ज्ञान समझा है, योगी जीवन जीना है, आध्यात्मिक बनना है, लौकिक सांसारिक जीवन नहीं जीना है तो पहला परिवर्तन दिनचर्या में है, क्योंकि दिनचर्या बदलने से योगी जीवन का एहसास होगा।

> प्राचीन काल में ही शिक्षा प्रणाली में जीवन की शुरूआत के 25 वर्ष ब्रह्मचर्य श्रम की स्थिति में ही विद्या अध्ययन करते थे, क्योंकि पवित्रता बुद्धि को एकाग्र रखती है।

जीवन क्या है आज और कल। जीवन श्रेष्ठ बनाना है, जीवन सफल करना है तो रोज सफल करना है। तो लगेगा कि हाँ ये ज्ञान में चलते हैं। जिस बात के हैबिचुअल(आदती) हो जाते हैं उसे बदलने में तकलीफ होगी। पर महत्त्व समझेंगे, दृढ़ता रखेंगे और लगे रहेंगे तो परिवर्तन होगा। फिर इज़ी हो जाता है, मुश्किल नहीं लगता। अगर हमें क्वालिटी वाली पक्की ब्रह्माकुमारी लाइफ जीनी है, तो हमें ये करना होगा। अपनी दिनचर्या पर ध्यान देना है। क्योंकि लक्ष्य अगर पक्का है तो परिवर्तन निश्चित है। - क्रमशः

भुसावर-भरतपुर(राज.)। पीडब्ल्यूडी राज्यमंत्री भजन लाल जाटव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. संस्कृति बहन।

भुवनेश्वर-रवि टॉकीज़ स्क्वायर(ओडिशा)। पद्मनाव बेहेरा,स्टेट मिनिस्टर,कॉमर्स एंड ट्रांसपोर्ट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. इंदुमति बहन। साथ हैं ब्र.कु. विजय भाई एवं ब्र.कु. मधुस्मिता बहन।

बलिया-उ.प्र.। जिला जज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उमा दीदी।

फरीदाबाद से.21डी-हरियाणा। एमसीएफ कमिश्नर यशपाल यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन एवं ब्र.कु. रंजना बहन।

बहल-हरियाणा। स्वाधीनता दिवस के कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन। साथ में खड़े हैं गणपति डेयरी प्रोडक्ट प्रा.लि. बहल के निदेशक अमरजीत चौधरी, बैकुंठधाम संरक्षक सेवा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष सुरेश गर्ग पातवानिया, ब्र.कु. पूनम बहन व अन्य भाई-बहनें।

सादुलपुर-राजगढ़(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पुलिस थाना में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में सभी स्टाफ एवं थानाधिकारी कृष्ण कुमार बलौदा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा बहन। साथ हैं मंगतू राम मोहता,समाजसेवी एवं भामाशाह, ब्र.कु. सुशील, ब्र.कु. पूनम एवं हैदर अली।

झोझूकलां-हरियाणा। विधायक नैना सिंह चौटाला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वसुधा बहन।

फिरोजाबाद-उ.प्र.। मेयर नूतन राठौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजना बहन। साथ हैं ब्र.कु. खुशी बहन।

फतेहपुर-बाराबंकी(उ.प्र.)। विधायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीला बहन।

इम्फाल-मणिपुर। कॉमन वेल्थ गेम्स 2022 की गोल्ड मेडलिस्ट एवं टोक्यो ओलम्पिक्स की सिल्वर मेडलिस्ट वेटलिफ्टर मीराबाई चानू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलिमा दीदी।

आज़मगढ़-उ.प्र.। मंडलायुक्त मनीष चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रंजना बहन।

कोटा-वल्लभ नगर(राज.)। जिला कलेक्टर ओमप्रकाश बुनकर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

भादरा-राज.। सी.आई. रनवीर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन।

आस्का-ओडिशा। गहांगु बालाजी मठ के महंत महाराज राघवानंद दास जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रवाती बहन।

नरवाना-हरियाणा। डीएसपी कुलदीप सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता बहन व ब्र.कु. रेणु बहन।

खसखस का दाना है छोटा... पर काम करता बड़ा

स्वास्थ्य

खसखस छोटे तिलहन होते हैं, जो पॉपी नामक पौधे से मिलते हैं... पॉपी सीड्स या खसखस दुनिया भर में अलग-अलग किस्मों में उपलब्ध होता है। खसखस नीले और सफेद दो तरह का होता है। ये भारत में सबसे कॉमन सफेद रंग का मिलता है। ये राई जैसे छोटे-छोटे दानों के रूप में होता है। इसमें कई तरह के पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जो हमारी सेहत को ढेरों लाभ पहुंचाते हैं।

हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि खसखस के बीजों में ओमेगा-6 फैटी एसिड, कैल्शियम, मैग्नीशियम और फाइबर की अच्छी मात्रा होती है। आइए जानते हैं इसके फायदों के बारे में...

नींद की परेशानी दूर होगी

खसखस नींद से जुड़ी समस्याओं से राहत देता है क्योंकि इसके सेवन से नींद आसानी से आती है। अगर आप भी अनिद्रा की समस्या से परेशान हैं तो सोने से पहले खसखस के पेस्ट को गर्म दूध के साथ लेंगे तो राहत मिलेगी।

आँखों की सेहत को बनाए रखे

खसखस आपकी आँखों की सेहत को भी बेहतर बनाए रखता है क्योंकि इसमें ज़िंक और एंटीऑक्सीडेंट भी होता है जो कि दृष्टि में सुधार करने और मैकुलर डिजनरेशन जैसी आँखों की बीमारियों से बचाने में मदद करती है। इसलिए खसखस को आँखों के लिए अमृत माना गया है।

हड्डियों को बनाता मजबूत

हड्डियों को मजबूत बनाने में खसखस आपकी मदद करता है। आप सुबह खाली पेट इसका सेवन कर सकते हैं। खसखस के बीजों में मौजूद मैंगनीज़ और प्रोटीन कोलेजन के उत्पादन में मदद करता है जो हड्डियों को गंभीर क्षति से बचाता है। आप खाली पेट दूध के साथ इसका सेवन करें।

दूर होती कब्ज की समस्या

अगर आपको कब्ज और पेट की समस्या है तो आप खसखस का सेवन कर सकते हैं। खसखस के बीजों में फाइबर का अधिक मात्रा में होना मल में थोक जोड़ता है, जिसमें पेट साफ करने में मदद मिलती है। ये डाइटरी फाइबर से भरपूर होता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है। जब आप खसखस जैसे ज़्यादा फाइबर से भरपूर चीज़ों को खाते हैं, तो इसमें पानी को जोड़ने में मदद मिलती है। इससे आपका पेट आसानी से साफ हो जाता है।

मुंह के छालों को करता कम

खसखस मुंह के छालों के लिए भी फायदेमंद होता है। खसखस के बीजों का सुबह खाली पेट सेवन करना मुंह के छालों का कारगर इलाज है। खसखस के बीजों को भिगोकर रखें और इसमें शहद मिलाने के बाद इसका सेवन करें। ऐसा करने से जीभ की जलन भी खत्म होगी।

ब्लड प्रेशर कम करने में मददगार

खसखस आयरन से भरपूर होता है जो ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाता है। इसके सेवन से ब्लड प्रेशर का लेवल नियंत्रित रहता है और इनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड भी होता है, जो हृदय रोगों की संभावना को कम करने में फायदेमंद होता है।

प्रोटीन का अच्छा स्रोत

खसखस के बीज ओमेगा-4 फैटी एसिड, प्रोटीन, फाइबर का अच्छा स्रोत हैं। इसके अलावा इसमें विभिन्न फाइटोकेमिकल्स, विटामिन बी, थायमिन, कैल्शियम और मैंगनीज भी होता है इसलिए खसखस को एक उच्च पोषण वाला आहार माना जाता है।

सांस की दिक्कत करे दूर

खसखस के बीज सांस की बीमारियों के इलाज में बहुत कारगर हो सकते हैं। यह खांसी को कम करने में मदद करता है और अस्थमा जैसी समस्याओं के खिलाफ लंबे समय तक राहत प्रदान करता है।

यहाँ दी गई जानकारी सामान्य मान्यताओं और जानकारियों पर आधारित है। इस तरह के किसी भी उपचार, दवा, डाइट पर अमल करने से पहले डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हिमाद्रिश सुवान,चेयरपर्सन कन्फेडरेशन फॉर यंग लीडर्स एवं डायरेक्टर जनरल इंडियन इंस्टीट्यूट फॉर गवर्नेंस एंड लीडरशिप, शहजाद पूनावाला,राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा, ब्र.कु. कंचन दीदी,सेवाकेन्द्र संचालिका, एलेक्सी इलुवियेव,द्वितीय सचिव,भारत में रूसी दूतावास, ब्र.कु. फलक बहन तथा ब्र.कु. सुपर्णा बहन।

कायमगंज-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष मोनिका यादव, डॉ. नवल किशोर साकी कैंसर हॉस्पिटल तथा तहसीलदार राकेश जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. मिथिलेश बहन।

बरनाला-पंजाब। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज बहन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन, ब्र.कु. पुष्प बहन, ब्र.कु. सोमा बहन, ब्र.कु. कोमुदी बहन आदि दिखाई दे रहे हैं।

सादड़ी-राज.। जैन संस्था में प्रवचन करते हुए ब्र.कु. सुचिता बहन। साथ हैं जैन गुरु गौतम मुनि जी महाराज, विनय मुनि जी महाराज, धर्मानंद विजय जी महाराज तथा अन्य।

फ़ाज़िल्का-पंजाब। सुलेमानकी सादिकी बोर्डर पर जवानों को रक्षासूत्र बांधने एवं परमात्म संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रिया बहन, वरिष्ठ पत्रकार लीलाधर शर्मा, फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर सुभाष जी, प्रिंसिपल रवि डोडा तथा अन्य।

आज़मगढ़-उ.प्र.। जिला कारागार में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में जेलर रविंद्रनाथ एवं कैदियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. रंजना बहन। साथ हैं ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य।

गया-सिविल लाइन(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एयरपोर्ट में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में एयरपोर्ट डायरेक्टर बगजीत साहा, डीजीएम अवधेष कुमार, एजीएमसी अजय कुमार एवं अन्य कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी तथा अन्य।

कहलगांव-भागलपुर(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित अलौकिक रक्षाबंधन कार्यक्रम में एसडीओ, एसडीपीओ, थाना प्रभारी, स्थानीय मुख्य संचालिका ब्र.कु. अनीता दीदी, ब्र.कु. पूजा बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

बस्ती-उ.प्र.। कमिश्नर गोविंद राजू को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।

टूंडला-जीवनी नगर(उ.प्र.)। थाना इंस्पेक्टर राजेश पांडे को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू बहन एवं ब्र.कु. राखी बहन।

पलवल-हरियाणा। डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन कोर्ट पलवल के सुपरिटेंडेंट जितेन्दर कुमार तथा अन्य सभी सदस्यों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु. सुदेश बहन व ब्र.कु. कुसुम बहन।

निम्बाहेड़ा-राज.। उपखंड अधिकारी चन्द्रशेखर भण्डारी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवली बहन तथा अन्य।

श्रेष्ठ कर्म • जब तक हम आंतरिक स्थिति को नहीं बदलते तब तक बाहर की स्थिति बदल नहीं सकती

मीडिया मनोरंजन नहीं बल्कि एक ज़िम्मेवारी

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम सब एक महान परिवर्तन की तरफ चल चुके हैं। समाधान तो छोटी चीज़ होती है कि समस्या आयी उसका समाधान किया लेकिन एक ऐसा होता है कि महान परिवर्तन हो जहाँ सृष्टि की सारी समस्यायें ही खत्म हो जाती हैं। तो हम सब परमात्मा के वो फरिश्ते हैं जो कलियुगी दुनिया में रहते हुए सतयुगी संस्कार, सतयुगी संस्कृति और सतयुगी संसार का निर्माण करने के लिए सक्षम हैं। परमात्मा के चुने हुए बच्चों को ही परमात्मा अपने घर में बुलाता है तथा श्रेष्ठ कर्मों के फल स्वरूप ही हम यहां आ पाते हैं।

श्रेष्ठ कर्म करने की विधि सीख कर हम सभी देश और विश्व का भाग्य परिवर्तन करने वाले कर्म कर सकते हैं। समाधान यहीं से शुरु होगा क्योंकि कोई भी समाधान बाहर से नहीं आंतरिक स्थिति से होता है। जैसे ही हमारी आंतरिक स्थिति परिवर्तित होती है,हम जो करते हैं वो बदलना शुरु हो जाता है। जब तक हम आंतरिक स्थिति को नहीं बदलते और बाहर बदलने की कोशिश करते हैं कि हम ऐसे सोचेंगे, ऐसा नहीं सोचेंगे हम इस तरह से बात करेंगे, हम इस तरह से नहीं बोलेंगे, हम इन शब्दों से लिखेंगे, दूसरे शब्दों का हम उपयोग नहीं करेंगे तो वो थोड़े टाइम रहता है लेकिन थोड़े टाइम के बाद फिर से वापिस हम चेंज हो जाते हैं। हम सब ने परिवर्तन करने की कोशिश की है, लेकिन हम सब यह फील करते हैं कि दो दिन, चार दिन, दो महीने उसके बाद हम वापिस पुराने संस्कारों की तरफ चले जाते हैं। हमारे कर्मों से हमारा भाग्य बनता है। यह तो नहीं सोचते कि हमारा भाग्य परमात्मा लिख रहे हैं। क्योंकि जब भी जीवन की कोई बात आती है तो हम ऊपर की तरफ देखते हैं। और हम कहते हैं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? परमात्मा ने मेरे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? तो हमारे कर्मों से हमारा भाग्य बनता है। और हमारे कर्मों का प्रभाव कितनी आत्माओं पर पड़ रहा है उससे हमारा भाग्य बनता जाता है।

तो मीडिया एक ऐसा प्रोफेशन है जिसमें कार्मिक अकाउन्ट बहुत तीव्र गति से,क्योंकि आपका कार्मिक कनेक्शन एक के साथ नहीं होता,लाखों-करोड़ों के साथ होता है। आप अगर एक ऐसा शब्द लिखते हैं जिससे लाखों लोगों की आत्मिक स्थिति ऊपर की तरफ बढ़ती है। वो सारी दुआयें आप के पास चली जायेंगी। लेकिन अगर हम एक ऐसा शब्द लिखते हैं जिससे लाखों लोगों की स्थिति थोड़ी-सी नीचे आ गई है तो वो वायब्रेशन हमारे पास आयेंगे। लिखनी हमने वो ही बात है जो देश में हुई है, लेकिन लिखने का तरीका, सुनाने का तरीका, भाषा, शब्दों का उपयोग और हमारी स्थिति के वायब्रेशन यह हमारा कर्म है। जो हमारा प्रोफेशन है उसमें हमारी वायब्रेशन कौन-सी जाने वाली है वो हमारा कर्म है और हमारे कर्म से हमारा भाग्य बनता है।

आज जब हम देखते हैं, लोग कहते हैं कि मेरा मन सोचना ही बन्द नहीं करता है। कहते हैं पता नहीं मेरे को निगेटिव थॉट्स इतने क्यों आते रहते हैं तो हम सब उनको एक ही रीज़न(कारण) बताते हैं। आप बहुत ज़्यादा मीडिया सुन-पढ़ रहे हैं। हम उनसे कहते हैं कि आप अगर अपनी मन की स्थिति को सम्भालना चाहते हैं तो मीडिया से कंज्यूम(उपयोग) करना कम कर दो। लेकिन हम यह कहना नहीं चाहेंगे। अगर मीडिया उनको ऐसी खुराक देना शुरु कर दे जिससे उनके मन की स्थिति शक्तिशाली हो तो हम उनको कहेंगे मीडिया से और ज़्यादा सुनो, पढ़ो और देखो। लेकिन अगर छोटे-छोटे बच्चों के मन की स्थिति इतनी हिल रही है कि उनको एंग्ज़ाइटी(तनाव) और डिप्रेशन और पैनिक अटैक(भय का दौरा) हो रहा है। तो हमें उनको कहना पड़ता है कि आप फोन, टीवी और इन्टरनेट से जो ले रहे हैं उसको बंद कर दो। क्योंकि यह एक लॉ है कि जो हम सुनते, पढ़ते, देखते हैं उससे ही हमारी सोच बनती है, वो ही हम बनते हैं। इसीलिए जिनको अपनी सोच की क्वालिटी को चेंज करना है उनको अपने कंटेंट(विषय) को चेंज करना पड़ता है। फिर सारा दिन जो कंटेंट सबको दे रहे हैं उनकी सोच पर कितना असर पड़ता होगा! जब हम अपनी स्थिति को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेंगे तो अपने रोल में कुछ चेंज लाना नहीं पड़ेगा,आपके रोल में चेंज अपने आप आना शुरु हो जायेगा। आगे च्वॉइस हमारी है कि हमने क्या खिलाना है लेकिन उस प्रोफेशन से हम धन कमाते हैं। वो धन हमारे परिवार की पालना करता है। उस धन से हमारे घर का अन्न खरीदा जाता है,उस अन्न का असर परिवार के मन पर होता है और मन का असर तन पर होता है। तो सबसे इम्पोर्टेंट(महत्त्वपूर्ण) एनर्जी जो घर के अन्दर होती है वो होती है धन, लेकिन धन मतलब कितना धन नहीं,कैसे कमाया हुआ धन। अगर वो धन किसी को दुःख और दर्द देकर आता है। उस धन के साथ वो वायब्रेशन आ जाते हैं। लेकिन अगर वो धन किसी को सुख और शक्ति देकर आता है तो उसके साथ दुआओं कि एनर्जी आ जाती है। तो हो सकता है अगर हम न्यूज़ पॉज़िटिव बनाते हैं या कोई समाचार को बहुत पॉज़िटिव तरीके से लिखते हैं,बात वो ही होगी लेकिन लिखने का तरीका अगर अलग होगा हो सकता है कि उसके पाठक थोड़े कम हो लेकिन थोड़े कम पाठकों में भी आपके घर में दुआयें ज्यादा आयेंगी। हमें वो लीडरशीप क्वालिटी बनना है। हमें वो बनना है 'पॉवर ऑफ वन' एक की शक्ति। हम कहते हैं सिर्फ मेरे पॉज़िटिव लिखने से क्या होगा बाकि तो कोई लिखता नहीं, लेकिन पहले एक तो हिम्मत करे, शुरुआत एक से ही होती है। एक के हिम्मत से ही परिवर्तन होता है।

हाथरस-आवास विकास कॉलोनी(उ.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत बीएलएस इंटरनेशनल विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में राजस्व विभाग राज्यमंत्री अनूप प्रधान, हाथरस विधायक अंजुला माहौर, सिकंदराऊ विधायक वीरेंद्र सिंह राणा, नगर पंचायत अध्यक्ष आशीष शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष सीमा उपाध्याय, बीजेपी जिला अध्यक्ष गौरव आर्य, जिलाधिकारी रमेश रंजन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. भावना बहन, जिला विकास अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, अपर जिलाधिकारी एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बालोतरा-राज.। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री कैलाश चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उमा बहन।

टूंडला-जीवनी नगर(उ.प्र.)। 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के अंतर्गत वृक्षारोपण करते हुए विधायक प्रेमपाल धनगर, राष्ट्रीय सचिव पिछड़ा वर्ग प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उदयवीर सिंह पैनिया, ब्र.कु. शालू बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

काकद्वीप-प.बंगाल। बंकिम चंद्र हज़रा,स्टेट मिनिस्टर ऑफ सुंदरबन डेवलपमेंट को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुप्रिया बहन।

मऊ-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिला कारागार में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में जेल अधीक्षक नागेश जी तथा स्टाफ सहित सैंकड़ो कैदियों को रक्षासूत्र बांधा गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. एडवोकेट ओमप्रकाश, ब्र.कु. पंकज, ब्र.कु. अग्रजीत सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ब्रह्मपुर-मोहना(ओडिशा)। जिरांग बुद्ध मंदिर के बौद्ध भिक्षु शिष्यों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बबिता बहन।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। अजय कुमार मिश्रा,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर होम अफेयर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वृंदा बहन।

उरई-उ.प्र.। जिला जज तरुण सक्सेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना बहन।

फतेहपुर-उ.प्र.। डी.एम. श्रुति बहन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीरू बहन।

हथीन-हरियाणा। पूर्व विधायक रामजी लाल डागर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।

ठाकुरगंज-बिहार। एसबीआई के मैनेजर आसंतोष कुमार झा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रश्मि बहन।

कोरापुट-ओडिशा। फर्स्ट आई.आर.बी. कमांडेंट विभूतिभूषण महाराणा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।

मोकामा-बिहार। बड़हिया नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी अमित कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रोशनी बहन।

नेपाल-कलैया बारा। जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर उप महानगरपालिका के नगर प्रमुख बिनोद साह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मीना दीदी।

निगोही-बरेली(उ.प्र.)। पुलिस इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

परमात्म ऊर्जा

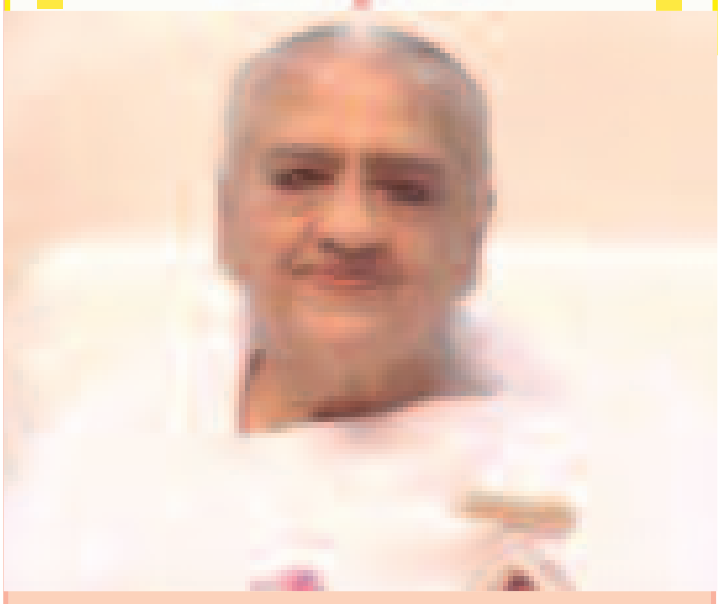

अभी सभी से न्यारा बनना है। अपनी देह से ही जब न्यारे बनना है, तो सभी बातों में भी न्यारे हो जायेंगे। अब पुरुषार्थ कर रहे हो न्यारे बनने का। न्यारे बनने से फिर स्वतः ही सभी के प्यारे बन जाते हो। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ न्यारे बनने का होता है। अगर सबका प्यारा बनना है तो पुरुषार्थ क्या करना है? सर्व से न्यारे बनने का। अपनी देह से न्यारे तो बनते ही हो लेकिन आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं उन्हों से भी न्यारे बनो। प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिज़ल्ट क्या होगी? और ही प्यारे बनने की बजाय बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे। इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है। कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी ज़रूर होती है। इस संगठन में अगर कोई न्यारी चीज़ दिखाई दे तो सभी का लगाव और सभी का प्यार उस तरफ चला जायेगा। तो आप भी न्यारे बनो। सहज पुरुषार्थ है ना! न्यारे नहीं बन पाते हैं, इसका कारण क्या है? आजकल का लगाव सारी दुनिया में किस कारण से होता है? (अट्रेक्शन पर) अट्रेक्शन भी स्वार्थ से है। इस समय का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है। तो स्वार्थ के कारण लगाव और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते। तो उसके लिए क्या करना पड़े? स्वार्थ का अर्थ क्या है? स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देह-अभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है। इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे? उसका सहज पुरुषार्थ, 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे। सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे।

कथा सरिता

हमारा व्यवहार ही हमारी पहचान है

बहुत समय पहले की बात है। घने जंगल किनारे एक गाँव बसा हुआ था। उस गाँव में दो भाई रहा करते थे। दोनों भाइयों के व्यवहार में बड़ा अंतर था। छोटा भाई बड़े भाई से बहुत प्यार करता था लेकिन बड़ा भाई स्वार्थी, लालची और दुष्ट था। वह छोटे भाई से चिढ़ता था और सदा उससे बुरा व्यवहार किया करता था। बड़े भाई के इस व्यवहार से छोटा भाई दुःखी हो जाता था लेकिन उसके प्रति प्रेम के कारण वह सबकुछ सह जाता था और कभी कुछ नहीं कहता था।

एक दिन बड़ा भाई लकड़ी काटने जंगल गया। वहाँ इधर-उधर तलाशने पर उसकी नज़र एक ऊंचे पेड़ पर पड़ी। आज इसी पेड़ की लकड़ी काटता हूँ ये सोचकर उसने कुल्हाड़ी उठा ली। लेकिन वह कोई साधारण पेड़ नहीं बल्कि एक जादुई पेड़ था। जैसे ही बड़ा भाई पेड़ पर कुल्हाड़ी से वार करने को हुआ, पेड़ उससे विनती करने लगा, "बंधु! मुझे मत काटो, मुझे बख्श दो। यदि तुम मुझे नहीं काटोगे तो मैं तुम्हें सोने के सेब दूंगा।"

सोने के सेब पाने के लालच में बड़ा भाई तैयार हो गया। पेड़ ने जब उसे सोने के कुछ सेब दिए, तो उसकी आँखें चौंधिया गई। उसका लालच और बढ़ गया। वह पेड़ से और सोने के सेब की मांग करने लगा। पेड़ के मना करने पर, वह उसे धमकाने लगा, "यदि तुमने मुझे और सेब नहीं दिए, तो मैं तुम्हें पूरा का पूरा काट दूंगा।"

यह बात सुनकर पेड़ को क्रोध आ गया। उसने बड़े भाई पर नुकीली सुईयों की बरसात कर दी। हज़ारों सुईयां चुभ जाने से बड़ा भाई दर्द से कराह उठा और वहीं गिर पड़ा। इधर सूर्यास्त होने के बाद भी जब बड़ा भाई घर नहीं आया, तो छोटे भाई को चिंता होने लगी। वह उसे खोजने जंगल की ओर निकल पड़ा।

जंगल पहुंचकर वह उसे खोजने लगा। खोजते-खोजते वह उसी जादुई पेड़ के पास पहुंच गया। वहाँ उसने बड़े भाई को जमीन पर पड़े कराहते हुए देखा। वह फौरन उसके करीब पहुंचा और उसके शरीर से सुईयाँ निकालने लगा। छोटे भाई का प्रेम देखकर बड़े भाई का दिल पसीज गया। उसे अपने व्यवहार पर पछतावा होने लगा। उसकी आँखों से आँसू बह निकले और वह अपने छोटे भाई से माफी मांगने लगा। उसने वचन दिया कि आगे से कभी उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करेगा।

छोटे भाई ने बड़े भाई को गले से लगा लिया। जादुई पेड़ ने भी जब बड़े भाई के व्यवहार में बदलाव देखा तो उसे ढेर सारे सोने के सेब दिए। उन सोने के सेबों को बेचकर प्राप्त पैसों से दोनों भाइयों ने एक व्यवसाय प्रारंभ किया, जो धीरे-धीरे अच्छा चलने लगा और दोनों भाई सुख से रहने लगे।

सीख : दूसरों के प्रति सदा दयालु रहें। दयालुता सदा सराही जाती है।

शमसाबाद-आगरा(उ.प्र.)। थानाध्यक्ष राजीव कुमार व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन व अन्य।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। 83 बटालियन सीआरपीएफ कैंपस में रक्षासूत्र बांधने से पूर्व सभी को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. देविका बहन। इस मौके पर डिप्टी कमांडर ऑफिसर्स एवं जवान उपस्थित रहे।

जगन्नाथ पुरी-ओडिशा। विधायक जे.के. सारंगी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य।

सोनीपत से.15-हरियाणा। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत तिरंगा रैली निकाली गई। इस मौके पर एमएलए सुरेंद्र पवार, महापौर निखिल मदान, ब्र.कु. प्रमोद बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

घाटमपुर-उ.प्र.। उपजिलाधिकारी अमित कुमार गुप्ता एवं तहसीलदार सत्य प्रकाश सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. अनुराधा बहन एवं ब्र.कु. कपूर भाई।

नगरा-उ.प्र.। एस.एच.ओ. देवेन्द्र नाथ दुबे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।

बयाना-भरतपुर(राज.)। पुलिस उपाधीक्षक अजय शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमलेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. साक्षी बहन।

बिहटा-बिहार। एनडीआरएफ बिहटा में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुजाता बहन तथा अन्य।

नोएडा-उ.प्र.। रितु महेश्वरी,सीईओ, नोएडा अथॉरिटी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. राधा बहन।

जयपुर-प्रतापनगर(राज.)। कृष्णा नागर, बैडमिंटन प्लेयर गोल्ड मेडलिस्ट इन टोक्यो पैरालिम्पिक्स 2020,खेल रत्न अवॉर्डी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शिल्पा बहन।

हर दीया महज़ दीया नहीं...एक संदेश...

भारतीय परंपरा में हर एक त्योहार हमारे किये गये कर्मों का यादगार ही है। इसका इतिहास पुराना भी है और अति महत्त्वपूर्ण भी। लेकिन पुराने इतिहास के किंवदंतियों को कुरेदने के पश्चात् अलग-अलग समाजशास्त्री या विद्वान दोनों ने इनके अर्थों को स्थूलता के साथ जोड़ा कि ये बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है जिसमें साक्ष्य के रूप में वे कहते हैं कि श्रीराम चन्द्र जी ने रावण पर विजय प्राप्त की, उसकी यादगार में अयोध्या में दीप प्रज्वलन किया गया, दीपावली मनाई गई।

हम सब अगर इसके सामाजिक अर्थ से थोड़ा-सा निकलकर इसके शाब्दिक अर्थ को ही देखें तो पायेंगे कि अयोध्या शब्द अध्ययन शब्द से बना है। जब हम अपने छोटे-छोटे बिंदुओं को लेकर छोटे-छोटे विचारों को लेकर सेल्फ स्टडी करते या स्व-अध्ययन करते तो उसको अयोध्या शब्द के साथ जोड़ा जाता माना जहाँ सभी अपने एक-एक अध्याय को पूरा करने के लिए जुड़े हुए हैं। अब अयोध्या को राम की नगरी कहते जहाँ राजा भी सुखी, प्रजा भी सुखी। तो कोई भी राजा या प्रजा कहाँ पर सुखी रह सकता है? जहाँ सभी का विचार एक समान, व्यवहार एक समान, कर्म एक समान और एक-दूसरे के प्रति सम्मान हो वहाँ राम राज्य कहा जाये। कहने का अर्थ है कि व्यक्ति जब पूरी तरह से अपने आप को जागृत करे, अपने आत्मिक दीये को जगाये माना हर आत्मा राम अपने आप को जागृत कर ले तो सभी को देखने का नज़रिया हमारा बदल जाता है।

एक बहुत सुंदर गीत है, आप सबने सुना होगा, सत्यम् शिवम् सुंदरम...। इस गीत की एक लाइन है, राम अवध में, काशी में शिव, कान्हा वृंदावन में, आगे की लाइनें हैं दया करो प्रभु देखूं इनको हर घर के आंगन में। अब ये गीत पूरी तरह से क्या बयां करता है कि हर घर में अगर राम आ जाये, राम जैसे लोग आ जायें तो राजा और प्रजा सुखी नहीं हो जायेंगे! इसीलिए हमारे अंदर जो भाव है वो क्या है कि आज हर कोई चाहे कहे या न कहे, लेकिन अंदर से परेशान बहुत है। वो सिर्फ एक चरित्र के रूप में राम या कृष्ण की महिमा तो कर रहा है, गीत भी उसके अच्छे-अच्छे हैं, उसको गा भी रहा है, उन चरित्रों को ढूंढ भी रहा है, कहाँ पर, हर घर के आंगन में। और इस गाने में एक अंतिम लाइन है राधा मोहन शरणम्। इसका भावार्थ है कि जब कभी कीर्तन होता है तो लोग गाते हैं कि राधा-राधा रटने से बिहारी आ जायेंगे लेकिन आप अपने से सोचो कि राधा बोलने से बिहारी कैसे आ जायेंगे! राधा का अर्थ यहाँ पर है कि जो राम के गुण को धारण करे और जिसके अंदर 'मोह' न(मोहन) हो वैसा हर घर में राम और कृष्ण चाहिए। तो ये एक दीपावली की ज्योति का यादगार है कि जब हर आत्मा अपने पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में आती है, अपनी चैतन्यता को प्राप्त करती है, अपनी जागृति में जीती है, अपने हेल्थ-वेल्थ और हैप्पीनेस की कम्प्लीट जागृति जिसके अंदर है वो दुनिया रामराज्य होगी। जब ऐसे राम राज्य की कल्पना जो हमारे जीवन में चल रही है तो निश्चित रूप से दीपावली जिसे दीपों का त्योहार कहते हैं उसमें दीप जगाने से क्या जागृति या रोशनी आ जाएगी पूरी दुनिया में! नहीं ना। तो वो हमारी जागृति का एक यादगार तो है लेकिन उसे निरंतर जगाये रखने से दीपावली के अर्थ के साथ हम जियेंगे।

पूरे साल में एक बार, वो भी मिट्टी का दीया और आजकल तो आर्टीफिशियल दीये और लाइट भी लगाते हैं, लड़ियां लगाते हैं। वो आत्मा की सजावट के लिए है या घर की सजावट के लिए? तो हमारे से चारों ओर रोशनी फैले, हमारे से लोगों के अंदर जागृति आए, हमारे जीवन के परिवर्तन के आधार से लोगों के अंतर में परिवर्तन हो तब तो दीपावली सही अर्थ में हम मनाएंगे या दीपावली के साथ सही अर्थ में न्याय कर पायेंगे। नहीं तो ऐसे ही दीये जगाते रहेंगे, हर साल मनाते रहेंगे लेकिन उसका अर्थ न जानने से केवल परंपरा वश हम कार्य कर लेंगे, उसके साथ जी नहीं पायेंगे। तो ये है दीपावली का सही भावार्थ। अगर आपको समझ में आ जाये तो समझो आपका कल्याण हो जाये।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। पीयूष गोयल,कैबिनेट मिनिस्टर ऑफ टेक्सटाइल्स,कॉमर्स एंड इंडस्ट्री एंड कन्ज़्यूमर को रक्षासूत्र बांधते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी।

सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित तिरंगा यात्रा का ग्लोबल लाइट हाउस के प्रांगण से माननीय राज्यमंत्री रविंद्र जायसवाल ने शुभारंभ किया। इस दौरान राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र, चिरईगाव ब्लॉक प्रमुख अभिषेक सिंह, ब्र.कु. विपिन भाई, ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. तापोशी बहन, सीआरपीएफ पहडिया के सहायक कमांडेंट विनोद सिंह तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

डाकपत्थर-उत्तराखंड। विधायक सहदेव पुंडरी, एसडीएम विरोध कुमार तथा सभी ग्राम प्रधानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सविता बहन।

जयपुर-राजापार्क(राज.)। अनुप्रेरणा कुंतल,आईएएस,चाइल्ड एन्वायरन्मेंट डिपार्टमेंट राज. को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं जयपुर सबज़ोन संचालिका ब्र.कु. पूनम दीदी व अन्य।

भभूआ-बिहार। डिस्ट्रिक्ट जज सम्पूर्णानन्द तिवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बबीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्रतिमा बहन।

समस्तीपुर-बिहार। नगर निगम आयुक्त विभूति रंजन चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता बहन। साथ हैं ब्र.कु. कृष्ण भाई।

नोएडा-उ.प्र.। सांसद डॉ. महेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा बहन।

बड़ौत-कैनाल रोड(उ.प्र.)। कृष्णपाल मलिक,स्टेट मिनिस्टर फॉर फॉरेस्ट, एनवायरनमेंट, एनिमल पार्क्स एंड क्लाइमेट चेंज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी बहन।

जयपुर-झालना(राज.)। अनुराधा गोगिया, एडिशनल डायरेक्टर जनरल,जवाहर कला केन्द्र जयपुर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. सलोनी बहन।

नवादा-बिहार। जिला पदाधिकारी एवं दंडाधिकारी श्रीमति उदिता सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीना बहन।

राजगीर-नालंदा(बिहार) एसडीओ अनीता सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

आगरा-सिकंदरा(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सेंट्रल कारागार में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. तन्नु बहन व ब्र.कु. रश्मि बहन द्वारा डीआईजी, डिप्टी जेलर एवं सभी स्टाफ सहित सभी कैदियों को रक्षासूत्र बांधा गया।

मीडिया ऐसी जो सभी मन भाये

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

सारे कार्यकलापों का विवरण आम जनमानस तक पहुंचाने के माध्यमों को ही हम मीडिया कहते हैं। मीडिया एक वस्तुस्थिति को यथास्थिति और यथावत अगर कहीं पहुंचा दे तो वो यथार्थ समाचार सबको मिल जाता है। ये स्थिति एक स्वतंत्र भारत की होनी चाहिए। लेकिन जब हमारी कला में विकृति आती है तो हमको समाचार पर ध्यान कम रहता है, अर्थ(धन) पर ज़्यादा रहता है। जहाँ पर अर्थ(धन) सहित मीडिया है वहाँ पर समाचार में मिलावट है। जहाँ पर अर्थ रहित मीडिया है वहाँ समाचार अर्थ सहित जाता है। थोड़ा-सा इस बात को हम आसान शब्दों में समझते हैं। भगवान को कहा जाता है कि उसे वो भक्त प्यारे होते हैं जो सरल हों, सहज हों, भावना वाले और निश्छल हों। मतलब कहते हैं कि इनकी बात आसानी से भगवान सुन लेता है।

सारे संतों को, महात्माओं को, बड़े-बड़े विद्वानों को आपने सुना होगा कि वे बातचीत करते हैं भगवान से सहज भाषा में, सरल भाषा में। उदाहरण के रूप में कबीरदास, रहीमदास, तुलसीदास, संत तुकाराम, ये सभी सरल भाषा अर्थात् सरल मीडिया के रूप में परमात्मा से बातचीत करते थे और वो बात पहुंच भी जाती थी और वो सुन भी लेते थे, समझ भी लेते थे और वरदान भी दे देते थे। ऐसा आप सभी भी कहते हैं कि संतों की वाणी में सहजता है, सरलता है जो आसानी से हम सभी को समझ में आती है। इसका अर्थ क्या हुआ कि हम सबको भी क्या सिर्फ जीविकोपार्जन के लिए अपने प्रोफेशन को अपनाना चाहिए या समाज को देखते हुए, समाज के जनमानस तक अपनी बात को सत्यता और स्पष्टता के साथ बिना किसी लोभ के पहुंचाना चाहिए? आज सबके पास पैसा बहुत है चाहे वो किसी भी प्रोफेशन में है, लेकिन बरकत नहीं है। बरकत नहीं है का अर्थ जिस भाव से, जिस अर्थ को लेकर वो काम कर रहे हैं उसमें लोभ है, उसमें विकार है और जो इस भाव से पैसा कमाता है कि समाज में अलग-अलग भ्रांतियों और मान्यताओं को फैलाकर सबके मन को खराब कर देना, सबके अंदर दूसरी तरह की चीज़ें डाल देना, उसका असर आपके ऊपर भी तो पड़ता है ना, क्योंकि जो भी वो खबर पढ़ता है, वो बार-बार यही सोचता है कि अच्छा! ऐसा है समाज, ऐसे हैं समाज के लोग। तो हमने अपनी तरफ से एक बार भी ये नहीं सोचा कि जब लोग इसको पढ़ेंगे, तो उनकी मान्यताएं सबके लिए बदल जायेंगी। अब इस बात को अगर हम सकारात्मकता के रूप में लें तो क्या हम सबके अंदर अच्छी मान्यताएं, अच्छी सोच पैदा नहीं कर सकते! अरे, हम तो वो लोग हैं जो पत्थर के लिए भी भावना पैदा कर लेते हैं। तो इसका अर्थ ये हुआ कि हम सबके लिए वो कर सकते हैं जो अविश्वसनीय और अकल्पनीय हो। और आपको जानकर हैरानी होगी कि 85 वर्षों से परमात्मा ब्रह्माकुमारीज़ में एक सोच के आधार से क्रांति ला रहे हैं। उनका इतना सुंदर और सरल स्लोगन है कि सभी आत्माएं बहुत अच्छी हैं लेकिन संस्कारों से कड़ी हैं।

भावार्थ ये है इसका कि आत्माएं तो आत्माएं ही हैं लेकिन जब वो धरती पर आईं, कर्मक्षेत्र पर आईं तो उन्होंने इंद्रियों वश होकर जो कर्म किया, माना काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश आकर जो कर्म किया उससे उनके अलग-अलग तरह के संस्कार बन गये। तो वो अपने बनाये हुए संस्कार हैं इसलिए वे दुःख भोग रहे हैं। परमात्मा आकर के सबको सिर्फ इंद्रियों के वश होकर कर्म न करने की प्रेरणा दे रहे हैं। वो ये कह रहे हैं कि जो आप देख रहे हैं, सुन रहे हैं वो सब खत्म हो जाने वाला है। और इनके वश होकर अगर आप कर्म करेंगे तो आप भी उसी वर्ग में शामिल हो जायेंगे। परमात्मा अपने 'मुरली' मीडिया के माध्यम से हमें प्रतिदिन चार पन्ने का समाचार पत्र देते हैं जिसके अंदर आत्मा को शक्तिशाली बनाने की खुराक होती और वो खुराक लेकर हम प्रतिदिन अपने कर्मक्षेत्र पर जाकर कर्म करते हैं। आप सोचिए, बड़े-बड़े संगठन, बड़ी-बड़ी समाजसेवी संस्थाएं भी ये दावा नहीं कर सकतीं लेकिन परमात्मा के हम सभी बच्चे ये दावा कर सकते हैं कि हमने उन विचारों को सुबह-सुबह अपने अंदर डालकर परिवर्तन किया है और ये बातें इतनी साधारण और सरल हैं कि सबको समझ में आ जाती हैं। यहां कोई अनपढ़ बूढ़ी माता हो या कोई पढ़ा लिखा हो, सबको ये भाषा समझ में आती है। क्यों आती है, क्योंकि उसमें भाव सभी को आगे बढ़ाने के हैं।

इस दुनिया की मीडिया में सबको नीचे गिराने के, सबके बारे में अनाप-शनाप लिखने के, सबकी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर लिखने के, आदि-आदि बातें होती हैं जो नीचे गिरायेंगी ही गिरायेंगी। तो एक मनुष्य परिवर्तन कैसे कर सकता है क्योंकि वो तो वश में है विकारों के। वो तो कहेगा कि हम कैसे जियेंगे ये नहीं करेंगे तो। तो ठीक है, इसीलिए तो परमात्मा का हम सभी को सहारा लेना चाहिए ताकि हममें शक्ति आ सके और हम वो कर सकें जो सही है और जो करना चाहिए। तो ऐसी स्वास्थपरक मीडिया बनें, जो खुद भी अच्छे रहें और औरों को भी अच्छा बनायें।

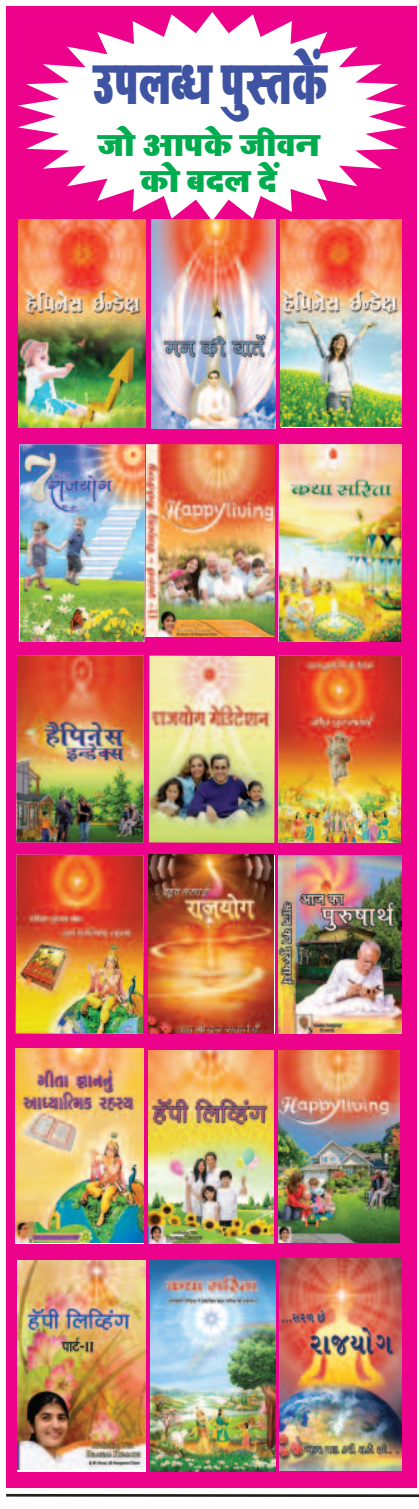

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं एक साल से एंग्जायटी डिसऑर्डर डिजीज से सफर कर रही हूँ। डर के कारण मैं अपने कॉन्शियसनेस से बाहर हो जाती हूँ और कहीं बाहर भी नहीं निकल पाती। मेरी बॉडी लैंग्वेज़, मेरे फेस एक्सप्रेशन उससे सबको पता चल जाता है कि मैं डर रही हूँ। इस वजह से मैं उनकी हँसी का पात्र बन जाती हूँ। मैं बहुत कोशिश करके भी इस मानसिक स्थिति से बाहर नहीं निकल पा रही हूँ,और इसी वजह से मैंने अपने कॉलेज भी जाना बंद कर दिया है। कृपया बतायें मैं इससे कैसे मुक्त होऊं?

उत्तर : आपकी समस्या बिल्कुल स्पष्ट है कि ये पूर्व जन्मों से चली आ रही है, तो ब्रेन भी उसी तरह की कमियों से भरा हुआ है। तो आपको मेडिकल मदद भी ले लेनी चाहिए। किसी अच्छे डॉक्टर से चाहे होम्योपैथी या फिर किसी न्यूरोफिज़िशियन से जो ब्रेन के स्पेशलिस्ट होते हैं उनसे ताकि आपको मेडिसिन की थोड़ी मदद मिल जाये। लेकिन स्पिरिचुअली भी आप बहुत कुछ कर सकती हैं। आपको मेडिटेशन सीख लेना चाहिए और कुछ बातें शेयर कर रहा हूँ जो आप अपनी दिनचर्या के साथ जोड़ लें। आपमें आत्मविश्वास भी आयेगा, चिंता भी दूर होगी और भय भी दूर हो जायेगा। देखिए हम सभी आत्मायें हैं यहाँ। आत्मा की एक क्वालिटी आत्मा परमपवित्र, आत्मा बहुत शक्तिशाली है। ये जो प्युरिटी है ये हमारे ब्रेन के लिए बहुत बड़ा टॉनिक है। तो प्युअर वायब्रेशन ब्रेन को देने हैं आपको। एक एक मिनट का समय दें और पाँच बार करें कि मैं आत्मा हूँ, मैं पवित्र हूँ और मुझसे पवित्र किरणें निकलकर ब्रेन को जा रही हैं। जैसे ब्रेन सफेद किरणों से भरता जा रहा है। ये विजुअलाइज़(कल्पना करना) करें। मेरे ब्रेन में बहुत प्युअर एनर्जी भर गई है और वो ब्रेन को एफिशिएंट(कुशल) बना रही है, बहुत पॉज़िटिव बना रही है। बहुत शक्तिशाली कर रही है। पाँच बार तो ये अभ्यास करें। और दूसरी चीज़ डर का जो बीज है वो है मृत्यु। जीव-प्राणी मृत्यु से भयभीत हैं। ये बिल्कुल संभव है कि किसी जन्म में या पिछले जन्म में आपकी मृत्यु ज़रूर ज़्यादा कष्टकारी हुई है। जैसे कोई लोग आग में जल जाते हैं या जला दिए जाते हैं। कोई लोग पानी में डूब-डूब कर मर जाते हैं। किसी को क्रिमिनल्स के द्वारा सता-सताकर मारा जाता है। काट-काट कर मारा जाता है। ऐसे-ऐसे केस होते रहते हैं लेकिन भय सब्कॉन्शियस माइंड में सदा के लिए समा जाता है। वो भी आपका कारण हो सकता है और कुछ भी घटनायें हो सकती हैं। तो आपको ईश्वरीय महावाक्यों का अच्छा अध्ययन करना चाहिए। और पाँच-सात ऐसे पॉवरफुल थॉट्स लिख लेने चाहिए जो आपको शक्तियां देते रहें, जो आपका भय समाप्त करते रहें। इसलिए ज्ञान की स्टडी जिन्हें हम ईश्वरीय महावाक्य कहते हैं, जिन्हें हम मुरली कहते हैं। आपको दिन में पाँच बार अवश्य करनी चाहिए। थोड़ा आपको घर से बाहर निकलना पड़ेगा। हमारे सेवाकेन्द्रों पर कई प्रोग्राम्स होते हैं आप पब्लिक में जायेंगी, आप बोलना सीखेंगी। जब आप बोलेंगी, पब्लिक में ज्ञान देंगी तो वो सारी चीज़ें आपकी डेवलप हो जायेंगी। और जब सुबह आप उठें तो एक बहुत अच्छी अवेअरनेस अपने आपको दें कि मैं सर्वशक्तिवान की संतान हूँ, वो मेरे साथ है जैसे वो मेरे सिर के ऊपर छत्रछाया है। और मैं आत्मा तो अमर हूँ और जिसका बाप ही महाकाल हो उसे डरने की ज़रूरत है! ये चिंतन करें। मैं तो आत्मा हूँ और आत्मा की मृत्यु होती ही नहीं ये बार-बार भरें अपने सब्कॉन्शियस माइंड में। मैं बहुत सुखी हूँ, मैं बहुत निर्भय हूँ, मेरा साथी तो स्वयं भगवान है। ये विचार पाँच-पाँच बार करें तो आपके सब्कॉन्शियस माइंड में जो भय समा गया है, और जो ये आप डरी-डरी, चिंतित-सी रहती हैं तो आपकी पर्सनैलिटी तो एकदम दब गई। तो उससे बाहर निकल जायेगी और निर्भय हो जायेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम कोमल है। मैं 28 वर्ष की एक गृहणी हूँ। मैं नौकरी के लिए पिछले पाँच साल से प्रयास कर रही हूँ लेकिन मुझे लगातार असफलता मिल रही है। बार-बार की असफलता के कारण मैं निराश हो गई हूँ, मैं थक गई हूँ। अब मैं टीचिंग लाइन में जाने की तैयारी कर रही हूँ लेकिन मन में ये संदेह बना ही रहता है कि क्या मैं सफल हो पाऊंगी! बार-बार की असफलता ने मेरे आत्मविश्वास को बिल्कुल ही हिला दिया है। कृपया कुछ उपाय बतायें।

उत्तर : बिल्कुल प्रैक्टिकल है जिसको पाँच साल से नौकरी न मिली हो वो तो ये सोच ही लेगा कि मुझे कभी नहीं मिलेगी। लेकिन आप एक स्लोगन याद रखना असफलता ही सफलता की चाबी है। इसलिए अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है। निराशा की चादर ओढ़ने की ज़रूरत नहीं है। इन काले बादलों को अपने ऊपर से बिल्कुल हटा दें। अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करना होगा। आपके सामने विघ्न अवश्य है। कोई विकर्म आपका सामना कर रहा है। दीवार बनकर खड़ा है। पहले तो आपको अपनी लाइन क्लीयर करनी होगी। एक 21 दिन का प्रोग्राम बनाना होगा। दो संकल्पों से योग शुरु करना है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विघ्नविनाशक हूँ। पाँच बार पहले ये दोनों संकल्प करें और फिर एक घंटा योग करें। अगर आपने मेडिटेशन नहीं सीखा है तो आप सीख लें। क्योंकि इस विघ्न को हटाना बहुत ज़रूरी है। फिर आप 21 दिन के बाद पायेंगी कि जैसे कोई काली छाया आपके ऊपर से उतर गई। कोई बोझ, एक दबाव बना हुआ था वो हट गया। आपको आत्मविश्वास से एक विज़न बनाना है। सवेरे उठते ही आप विज़न देखेंगी कि इंटरव्यू हो रहा है और मैं सिलेक्ट हो गई हूँ। ये आत्मविश्वास लायें। जब तक इंटरव्यू का कॉल आये तब तक आप रोज़ सात बार मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है इस तरह के अभ्यास करते रहें। मन में निराशा बिल्कुल न लायें। आत्मविश्वास आपकी लैंग्वेज़ को बदलेगा, बॉडी लैंग्वेज़ को बदलेगा और ये जो पॉज़िटिविटी क्रियेट होगी वो खुद को टच होगी और रिज़ल्ट बहुत पॉज़िटिव होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

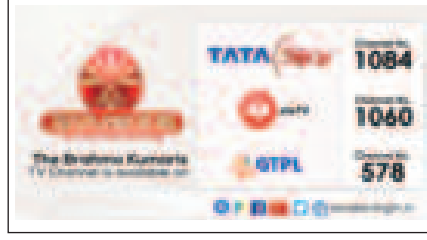

हार को हार न मान एक अवसर मानें

हमारी खुशी की, हमारी शान्ति की, हमारे जीवन में बहुत वैल्यू है। हमारा खुशनुमा जीवन हमारे जीवन की वैल्यू को बढ़ा देता है। यदि मन में व्यर्थ संकल्प चल रहे हों, बुरे संकल्प चल रहे हों, निराशा के संकल्प चल रहे हों तो खुशी, शान्ति समाप्त हो जाती है। परंतु हम अपना मन तैयार करें। मना बना लें कि मुझे खुश रहना है। खुशी और शान्ति तो मेरी अपनी सम्पदा है। ये सबको जानना चाहिए जैसे धन हमारा खज़ाना, हमारी सम्पत्ति है। हम उसको बहुत वैल्यू देते हैं- कमाने पर भी और बचाने पर भी। ऐसे ही खुशी और शान्ति बहुत बड़े खज़ाने हैं। शान्ति नष्ट हो जाये तसे टेंशन ही रहने लगे रात-दिन। चिंताओं में जीवन जलने लगे, तो धन-सम्पत्ति भी बेकार नज़र आने लगती है ना! सम्बन्धों में झगड़े हो रात-दिन, खुशी नहीं रहती, लगता है सबकुछ छोड़ खुशी रहनी चाहिए। जैसे देह को खुराक न मिले तो क्या हाल होगा देह का! मन को, आत्मा को खुशी न मिले तो उसका भी हाल बुरा हो जाता है। तो हम तैयार रहें किसी भी कीमत पर मुझे तो अपनी खुशी नहीं छोड़नी है। मनुष्य की जब हार होती है, जब उसे असफलता मिलती है तब उसके संकल्प भी बहुत तेज हो जाते हैं,उसकी खुशी भी चली जाती है।

हम याद रखें हार-जीत जीवन का खेल है। ये जीवन में चलता ही रहेगा। रेस्लर हैं एक की जीत, एक की हार, दो धावक हैं किसी को गोल्ड मेडल, किसी को सिल्वर, किसी को कांस्य पदक मिलेगा तय है। कितना अंतर होता है, बहुत मामूली सा। लेकिन एक धावक जिसको कांस्य पदक मिला वो निराश हो जाये, छोड़ दे हम नहीं दौड़ेंगे आज से। हमारे भाग्य में तो सफलता है ही नहीं। हमारी तो हार ही हो रही है जहाँ-तहाँ। हमने पता नहीं क्या पाप किए, हमारा तो भाग्य ही फूटा हुआ है। संकल्पों की एक लम्बी लाइन उसके मन में लग जाये तो देख लें कि क्या होगा! घर में भी खुशी का माहौल नहीं होगा। एक उदाहरण देता हूँ, एक विद्यार्थी था उसका अपने बोर्ड को टॉप करने का लक्ष्य था। तैयारी वैसी थी लेकिन टॉप कर दिया दूसरे ने। उसका नम्बर सेकण्ड रह गया। अन्तर रहा केवल प्वाइंट टू परसेंट का। देखिए कितना थोड़ा रहा। लेकिन वो निराश हो गया। उसको डिप्रेशन हो गया। उसके मार्क्स भी बहुत थे लेकिन एक एक्सपेक्टेशन(आशा) पूरी नहीं हुई उसने उसको हार मान लिया, असफलता मान ली और इतना सोच लिया, इतना व्यर्थ संकल्प चला लिया कि डिप्रेशन हो गया। डिप्रेशन को दूर करने में साल लगा। तब तक एक साल उसका बेकार हुआ। मैंने उसे कहा जो बच्चे केवल पास हुए 50 प्रतिशत लाकर उनके घरों में मिठाईयां बंट रही है हमारा बच्चा पास हो गया। और तुम 90 प्रतिशत से भी ज़्यादा लेकर उदास हो गये हो। तुम्हारे चेहरे की रौनक समाप्त हो गई, सम्भलो थोड़ा, बुद्धिमान बनो। ये हमें जानना चाहिए कि सफलता-असफलता, हार-जीत, ये सदा ही चलता आया है। अच्छे-अच्छे योग्य व्यक्ति भी कभी-कभी हार जाते हैं। अच्छे-अच्छे बहादुर लोगों को असफलता का मुंह देखना पड़ता है। बड़ी-बड़ी सेनायें भी कभी-कभी हार मान लेती हैं। हार से हार नहीं मानना है बस ये स्लोगन पक्का कर दो। कहीं भी होने वाली हार मुझे हरा नहीं सकती। मेरी जीत निश्चत होगी, कोई भी हार मेरे मनोबल को गिरा नहीं सकती। ये पॉवरफुल संकल्प करें क्योंकि मैं भगवान की संतान हूँ। वो सर्वशक्तिवान है। तो मैं भी पॉवरफुल हूँ। शक्तिशाली आत्मायें कभी भयभीत नहीं हुआ करती। वो तो निर्भय हैं। वो कभी कदम पीछे नहीं हटाया करती। कुछ भी हो जाये वे तो आगे बढ़ती रहती हैं।

> जिनकी आँखें नहीं होती, जिनको नेत्रहीन अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके दोनों हाथ नहीं वो बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके पैर कट गये वो भी चमत्कारिक काम कर रहे हैं, तो हम निराश क्यों...!

हार हो जाये तो बहुत सारे व्यर्थ संकल्प अपने मन में चलायें नहीं। बार-बार प्रयास करने पर भी मेरी हार होती है। क्या करूँ, इससे तो अच्छा मर जाऊं। इससे तो अच्छा ये काम छोड़कर ये काम कर लूं। अभी मरने का संकल्प बहुतों को आता है। जब असफल हो जाते हैं तो निराश होकर सोचते हैं कि सुसाइड कर लूं। ये कमज़ोर संकल्प कायरता से भरपूर संकल्प हैं। अरे जब अंधे लोग भी, जिनको नेत्रहीन आजकल अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके दोनों हाथ नहीं हैं वो बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके पैर कट गये हैं वो भी चमत्कारिक काम कर रहे हैं। तो हम निराश क्यों हों, ऐसे पॉवरफुल संकल्प करें। तो हमारा एक पॉवरफुल, पॉज़िटिव संकल्प अनेक व्यर्थ संकल्पों को नष्ट करेगा। तो बस ध्यान दें इस व्यर्थ की दलदल में फंसते न जायें क्योंकि ये ऐसी दलदल है जो गहरी होती जाती है, डूबो देती है, नष्ट कर डालती है। इसमें ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। लेकिन केवल सम्पूर्ण ज्ञान ले लेना काफी नहीं है उसको यूज़ करना, उसको एप्लाई करना उसकी बहुत आवश्यकता होती है जीवन में।

व्यर्थ हमारी चीज़ नहीं है, हमारा जीवन तो समर्थ के लिए है, हम भगवान के बच्चे हैं। अच्छा ही सोचना है। मैं आपको फिर याद दिला दूं हमारे संकल्पों के वायब्रेशन दूर-दूर तक फैलते हैं। और जो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करने वाले हैं, श्रेष्ठ योग करने वाले हैं उन्हें जानना चाहिए हमारी पॉज़िटिव और पॉवरफुल, प्युअर संकल्प, समस्त आकाश मंडल को, नक्षत्रों को प्रभावित करते हैं तो क्यों न हम ये महान कार्य करें, क्यों व्यर्थ में रहकर अपनी श्रेष्ठ एनर्जी को नष्ट करें। अपने को ये चिंतन देना है। हम व्यर्थ से मुक्त होते चलेंगे। अच्छे संकल्पों से हमारा मन भरपूर होता चलेगा और हमें ये रोज़-रोज़ रियलाइज़ होगा कि ये सुन्दर संकल्प हमारी पर्सनैलिटी का निर्माण कर रहे हैं, और सुन्दर बना रहे हैं, आकर्षक बना रहे हैं। ये हमारा बहुत बड़ा खज़ाना है और हम बहुत साहूकार हो गये हैं। जब खज़ाना बढ़ता है तो बहुत खुशी होती है। तब हमारा जीवन खुशियों का भण्डार बन जायेगा।

आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। विधि एवं न्याय राज्य मंत्री एस.पी. सिंह बघेल को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु बहन एवं ब्र.कु. शालू बहन।

बांदा-उ.प्र.। डीआईजी विपिन मिश्रा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी बहन व अन्य।

कन्नौज-फर्रुखाबाद(उ.प्र.)। जिलाधिकारी शुभ्रांत शुक्ला को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम बहन। साथ हैं ब्र.कु. पूनम बहन एवं ब्र.कु. रेखा बहन।

लोहरदगा-झारखण्ड। डीएफओ अरविंद कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू बहन। साथ हैं ब्र.कु. आशामणि बहन एवं ब्र.कु. निर्मला बहन।

जयपुर-मॉडल टाउन(राज.)। राजस्थान पुलिस एकेडमी में एएसपी डॉ. भूपेन्द्र यादव एवं 150 पुलिसमैन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. गुलाब बहन, ब्र.कु. शशि बहन तथा अन्य।

कोलकाता म्यूज़ियम-प.बंगाल। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कला मंदिर में 'स्पीरिचुअल एम्पावरमेंट फॉर काइंडनेस एंड कम्पैशन' के भव्य शुभारंभ अवसर पर सर्वलोकानंद महाराज,सेक्रेट्री,रामकृष्ण मिशन,नरेन्द्रपुर, जस्टिस सुब्रत तालुकदार,जज,कोलकाता हाई कोर्ट, ब्र.कु. प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन,मोटिवेशनल ट्रेनर,मुम्बई, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय,एक्ज़ीक्युटिव सेक्रेट्री,ब्रह्माकुमारीज़, राजयोगिनी ब्र.कु. कानन दीदी सहित 1500 से अधिक गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

दिल्ली-किंग्सवे कैम्प(आउट्रम लाइन्स)। कोरोना वॉरियर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में कोरोना वॉरियर्स को सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुधा बहन।

दिल्ली-विपिन गार्डन। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम में एएसआई पी.एस. गोसाई एवं श्रीमति दीपा गोसाई को शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. जानकी बहन।

नागौर-राज.। तहसीलदार बहन दर्शना नायक को ईश्वरीय पुस्तिका एवं प्रसाद देते हुए ब्र.कु. अनिता दीदी। साथ हैं लेक्चरर ब्र.कु. मंजू बहन।

हरनौत-नालंदा(बिहार) मुख्य कारखाना प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल,हरनौत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बबीता बहन।

सुंदरबनी-जम्मू एंड कश्मीर। एडीसी विनोद कुमार बहनाल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् साथ हैं ब्र.कु. राजकुमारी दीदी तथा ब्र.कु. सविता दीदी।

बेतिया-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बेतिया सेन्ट्रल जेल में आयोजित अलौकिक रक्षाबंधन कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजना दीदी, जेल अधीक्षक अमरजीत सिंह, जेलर नीतीश कुमार, ब्र.कु. ललिता बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. रंजन भाई, ब्र.कु. संजय भाई, ब्र.कु. राकेश भाई एवं ब्र.कु. गौरव भाई सहित जेल के कैदी भाई उपस्थित रहे।

कार्यशाला ● आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत पत्रकारों एवं राजनीतिज्ञों हेतु तनाव प्रबंधन कार्यशाला

तनाव मुक्ति के लिए अध्यात्म और प्रकृति को साथी बनायें

एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में तनाव प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

नई दिल्ली। आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'माँ तुझे सलाम' थीम को लेकर पत्रकारों एवं राजनेताओं हेतु 'मेडिटेशन द्वारा तनाव मुक्ति' विषय पर एक प्रेरक कार्यशाला स्थानीय एनडीएमसी सेंटर,नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ एवं इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए उपभोक्ता मामले,खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जो संस्कार देती है वो निश्चित रूप से हमारे जीवन के लिए फलदायक है। आध्यात्मिकता के आधार पर ही विश्व को हमने नैतिक मापदंड अपनाने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि भारत के दर्शन एवं आध्यात्मिकता को देश-विदेश में फैलाने का श्रेय विश्व व्यापी ब्रह्माकुमारी संस्था को जाता है। आईआईएमसी,भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि अपने जीवन में अध्यात्म और प्रकृति को साथी बनायें तो जीवन में तनाव नहीं होगा। सुख शांति और वैभव तीनों के लिए आध्यात्मिकता और भौतिकता का संतुलन आवश्यक है। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के द्वारा जीवन में मानवीय मूल्यों और साइलेंस की शक्ति को धारण करके आज के मीडियाकर्मी एवं राजनीति के लोग स्वतः प्रेरित, सर्जनशील एवं तनाव रहित रह सकते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि निष्पक्ष, निःस्वार्थ, न्यायपूर्ण पत्रकारिता से पत्रकार तनावमुक्त रह सकते हैं। राजनेताओं को तनावमुक्त होने के लिए वोट और नोट से ऊपर उठकर जन कल्याण के अर्थ कार्य करना होगा। भारतीय मीडिया कल्याण संघ के अध्यक्ष राजीव निशाना ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिया जा रहा ज्ञान हमें तनाव से दूर करने में मदद करता है इसलिए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। आशीर्वचन देते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था के दिल्ली और हरियाणा स्थित अनेक सेवाकेन्द्रों की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि तनाव मुक्त रहने के लिए सभी को अपने जीवन में राजयोग मेडिटेशन को शामिल करना होगा। देशभक्ति पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम स्कूल के बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किया गया। 300 से अधिक लोगों ने कार्यक्रम का लाभ लिया। मंच पर उपस्थित दिल्ली पुलिस के विशेष आयुक्त दीपेन्द्र पाठक,आई पीएस ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास की ज़रूरत

न्यूज़ 24 की एडिटर इन चीफ श्रीमति अनुराधा प्रसाद ने कहा कि आज के पत्रकार दो धारी तलवार पर चल रहे हैं। इसलिए ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास की ज़रूरत है जिससे हम पत्रकार अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में तनाव को कम करते हुए खुश रह सकें।

कार्यक्रम में विशेष

सभी महानुभावों ने तनाव मुक्ति विषय पर रखे अपने महत्वपूर्ण वक्तव्य

देशभक्ति पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की स्कूल के बच्चों द्वारा दी गई प्रस्तुति

जीवन में लॉ के साथ लव भी होना ज़रूरी

अमरावती-महा.। 'शांति का विज्ञान' विषय पर ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व परिवर्तन भवन में संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस मौके पर डॉ. ए.पी. देशमुख, अधिष्ठाता,पंजाबराव देशमुख मेडिकल कॉलेज, अमरावती तथा डॉ. श्याम सुंदर निकम,पूर्व जिला शल्य चिकित्सक, अमरावती मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षा ब्रह्माकुमारीज़ अमरावती की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी ने संस्थान का परिचय देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का मेडिकल प्रभाग मेडिटेशन के द्वारा बीमारियों को कैसे ठीक कर सकते हैं, इस पर कार्य कर रहा है और हार्ट ब्लॉकेज जैसी समस्या को भी मेडिटेशन और लाइफ स्टाइल चेंज के द्वारा समाप्त किया जा रहा है। ब्र.कु. डॉ. ई.वी. गिरीश ने कहा कि मेडिकल के सेक्टर में कोई भी लॉ पूर्ण रूप से सुरक्षा नहीं दे पा रहा है। लॉ के साथ हमें अपने जीवन में लव लाने की ज़रूरत है। इस मौके पर कोविड जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यता और प्रेम से रोगियों की सेवा करने वाली सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल,अमरावती, रिम्स हॉस्पिटल,बख्तार हॉस्पिटल की नर्सेस एवं मेट्रन का सत्कार किया गया। इस मौके पर डॉ. आशा हरवाणी,अध्यक्षा,आई.एम.ए. एवं डॉ. आशा ताई ठाकरे के साथ मेडिकल प्रभाग के सभी डॉक्टर्स एवं मेडिकल स्टाफ मौजूद रहे। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. अश्विना बहन व आभार डॉ. कल्पना ताई राठी ने किया।

हलालपुर में 'आत्मनिर्भर किसान दिव्य सम्मेलन'

दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग,दिल्ली ज़ोन द्वारा हलालपुर गांव में आयोजित 'आत्मनिर्भर किसान दिव्य सम्मेलन' में ठाकुर किरन पाल सिंह,राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष,भा.कि.यू. ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों ने किसानों का यह मुद्दा उठाकर सराहनीय कार्य किया है। मैं मथुरा का हूँ और मैं मथुरा में भी ऐसे ही भव्य कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को जागरुक एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करूंगा। राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी,चेयरपर्सन,ग्राम विकास प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि भारत को सुपर पावर बनाने में किसानों का अहम रोल है। वर्तमान समय किसानों के आत्मसम्मान को जगाने का है। आत्मविश्वास से आत्मसम्मान जागृत होगा। जिला अधिकारी बहन शर्मिला, अतिरिक्त सरपंच और रिटायर्ड कमिश्नर,उत्तरी रेलवे के कुलदीप दहिया, शिक्षा अधिकारी, सिल्वर पदम विजेता ओम्पिक तथा स्वर्ण पदक विजेता कॉमनवेल्थ गेम्स के रवि दहिया, असि. सुपरिटेंडेंट,सोनीपत धर्मपाल दहिया तथा प्रसिद्ध समाजसेवी भूपसिंह दहिया ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की। मौके पर भा.कि.यू. के मुख्य महासचिव, दिल्ली ज़ोन के संजय राघव ने भा.कि.यू. के सभी सदस्यों को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय में होने वाले किसान सम्मेलन का निमंत्रण दिया। इस सम्मेलन का आयोजन ग्राम विकास प्रभाग की कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.राजकुमारी दीदी,मजलिस पार्क तथा कोऑर्डिनेटर जयप्रकाश भाई, सत्कार भवन ने किया। ब्र.कु.सुनीता बहन ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताया।

- **शाश्वत यौगिक खेती के प्रति बढ़ता किसानों का रुझान**
- **सम्मेलन में सम्मिलित होने पहुंचे हज़ारों किसान**

शाश्वत यौगिक खेती बनाएगी किसानों को आत्मनिर्भर

ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्यविधाता भवन में पहुंचे 500 से अधिक किसान बंधु

राजयोगी साधकों ने बताया शाश्वत यौगिक खेती का महत्व

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्य विधाता भवन में 'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में 500 से अधिक ग्राम सरपंच सचिव, किसान बंधु, कृषि अधिकारी एवं ग्राम विकास तथा कृषि से जुड़े महानुभावों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउंट आबू से आए कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई ने कहा कि वर्तमान समय शाश्वत यौगिक खेती को अपनाना बहुत ज़रूरी है क्योंकि कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन होता है। अन्न का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव तन पर होता है। अगर तन और मन को स्वस्थ रखना है तो हमें प्राकृतिक तरीके की शाश्वत यौगिक खेती को अपनाना होगा। इससे ही हमारा देश और किसान समृद्ध और खुशहाल हो सकेंगे।

कोल्हापुर से आये ब्र.कु. बाला साहब ने शाश्वत यौगिक खेती के अपने प्रयोगों और अनुभव को साझा करते हुए कहा कि अनेक वैज्ञानिक शोध हमें यही इशारा देते हैं कि वर्तमान खेती में रसायनों का उपयोग हमारे स्वास्थ्य, ज़मीन और आने वाली पीढ़ी सभी के लिए हानिकारक है। बैतूल हरदा क्षेत्र के सांसद डी.डी. उईके ने कहा कि हमें पूर्वजों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कृषि की पारंपरिक पद्धति को अपनाना है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, कृषि वैज्ञानिक विजय वर्मा, लायंस क्लब अध्यक्ष प्रताप देशमुख, ब्र.कु. रेखा बहन,मुरैना, ब्र.कु. मंजू बहन,बैतूल, ब्र.कु. सुनीता बहन,सारणी, ब्र.कु. नंदकिशोर भाई आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे। अंत में ब्र.कु. अरुणा बहन ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराया तथा शाश्वत यौगिक खेती अपनाने का संकल्प कराया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th,Sep 2022
स्वामी - राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा डी.बी. कॉर्प.लि. भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org